॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

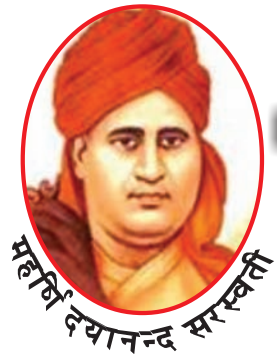

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अक्टूबर, 2013 वर्ष 16, अंक 10
विक्रमी सम्वत् 2070
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 24

आओ दीप जलाएँ

❒ डॉ. शिवदत्त पाण्डेय

इस समय सम्पूर्ण भारतवर्ष ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में दीपावली की तैयारियाँ हो रही हैं। जनमानस दीप पर्व को मनाने में सोल्लास रत हैं। ऐसे समय में इस पर्व को मनाने के कारणों, लाभों व हानियों पर विचार करना मनुष्य होने के नाते आवश्यक प्रतीत होता है। क्योंकि मनुष्य का मतलब है **'मत्वा कर्माणि सीव्यति'** अर्थात् जो विचार करके कर्मों को करता है। आइए विचार करें कि हमें दीपावली क्यों मनानी चाहिए? इसका लाभ क्या है तथा इसके साथ क्या-क्या भावनाएँ जुड़ी हुई हैं?

किंवदन्ती है कि विजयादशमी को रावण पर विजय करने के उपरान्त जब राम देवी सीता और भ्राता लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस आये थे तो उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने घर-घर में दीप जलाये थे। तभी से हम दीपावली मनाने लगे हैं। वस्तुतः इतिहास के आलोक में जब हम इस किंवदन्ती की परीक्षा करते हैं तो यह घटना तर्क के आधार पर सत्य सिद्ध नहीं होती है।

वैदिक संस्कृति के प्राणतत्व हैं कृषि, ऋषि और यज्ञ। हम ऋषि परम्परा का अवलम्बन करते हुए यज्ञ की सिद्धि के लिए कृषि करते हैं और हमारा मूलमन्त्र है **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** अर्थात् हे प्रभो! हमें अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले चलो। तो प्रकाश की प्राप्ति के लिए दीप जलाना तो परमावश्यक है। जीवन ज्योति को आदीप्त करने के लिए प्रकाश को लाना आवश्यक है। जबसे सृष्टि बनी है तब से मनुष्य अन्धकार से युद्ध कर रहा है और इस पर सर्वांश में विजय पाने के लिए सामूहिक रूप से दीप जलाना आवश्यक है। घर-घर दीप जलाना अनिवार्य है। इसीलिए दीप जलाने को पर्व घोषित कर दिया गया है। 'पर्व' का मतलब है **''पृणाति पिपर्त्ति पालयति पूरयति प्रीणाति च जगदिति पर्व''**। अर्थात् जो पालन करता है, पूर्ण करता है और तृप्ति करता है उसे पर्व कहते हैं और तृप्ति होती है भूमा से, प्रचुरता से, आधिक्य से। इसीलिए दीप एक पर्व है जब इसे सब जलाते हैं और जो इसे ठीक-ठीक जलाते हैं श्रद्धाभाव से ज्ञानपूर्वक जलाते हैं उनके जीवन में पर्व-ही-होता है।

हम कृषि करते हैं, उससे हमें जो उपलब्ध होता है उसे प्रभु कृपा मानते हैं और उसका अकेले सेवन करना पाप समझते हैं। हम चाहते हैं कि हमारा जो कुछ हो वह समाज के लिए हो राष्ट्र के लिए हो। तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित। सब कुछ 'इदं राष्ट्राय इदन्न मस'। तो जब आश्विन मास में फसल पककर किसान के घर आती है तो वह प्रसन्न, सन्तुष्ट और तृप्त होता था और अकेला न खाये इसलिए सर्वप्रथम यज्ञदेव को समर्पित करता था, सबके लिए देने का प्रयत्न करता अतः वैदिक परम्परा में यही 'नवसस्येष्टि' नये अन्न की इष्टि अर्थात् यज्ञ ही दीपपर्व था। अमावस्या के दिन सब 'नव' अन्न से यज्ञ करते थे घर-घर दीप जलाते थे यहीं से अर्थात् जब धरती पर और कोई संस्कृति नहीं थी, कोई सभ्यता नहीं थी, वैदिक संस्कृति और सभ्यता ही थी तब से हम दीपपर्व मनाते चले आये हैं। राम खुद उस संस्कृति में पले, बढ़े और उसके पोषक थे। यह पर्व तो आदिपर्व है, जिसे राम के पूर्वज भी मानते थे।

इस पर्व का नाम 'नवसस्येष्टि' है अतः यह सिद्ध है कि जब से धरती पर मानवीय संस्कृति है तब से यह पर्व भी है। वैदिक संस्कृति चिरकाल से अजर-अमर है तो इसका कारण ये पर्व ही हैं। जिस वस्तु, जीवन, संस्कृति या सभ्यता में पर्व नहीं होते वह अक्षुण्ण चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकती। क्योंकि पर्व शब्द का अर्थ ही है पूर्ति। संस्कृत साहित्य में पर्व शब्द ग्रन्थि=गाँठ के पर्यायवाची के रूप में प्रसिद्ध है। संसार में सब ओर दृष्टिगोचर होता है कि जहाँ-जहाँ पर्व हैं, गाँठ है वहीं-वहीं वृद्धि है। जिसमें जितनी गाँठे हैं वह उतना ही ऋद्ध, वृद्ध और समृद्ध है। बांस में गांठ है इसीलिए वह इतना लम्बा है। दूर्वा घास में, लौकी आदि लताओं में जो वृद्धि है उसका कारण पर्व है, गांठ ही है। हमारी परम्परा तो पर्व से ही चलती है, इसलिए विवाह में भी हमारे यहाँ ग्रन्थि बन्धन होता है और जन्मदिवस

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

को वर्षगांठ के रूप में मनाते हुए आयुष्यवृद्धि की कामना करते हैं।

हमें तो प्रतीत होता है कि यही पर्वों की महान् परम्परा ही है जिससे हम हजारों झञ्झावातों में भी अडिग खड़े हुए हैं और यदि हमें अपने को जीवित रखना है तो पर्वों को जीवन्त रखना होगा। यदि ये पर्व अपने यथार्थ रूप में जीवित रहेंगे तो हमारी सभ्यता जीवित रहेगी, हमारी संस्कृति जीवन्त होगी। अतः संस्कृति के संरक्षक इन पर्वों को जीवित और यथार्थरूप में यथार्थ भावनाओं और प्रतीकों के साथ जीवित रखना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है और महत्तर उत्तरदायित्व है।

यह पर्व हमें सिखाता है कि हमारा जीवन केवल हमारे लिए नहीं होना चाहिए इसी भाव के साथ हम अपने घर में आए अन्न के साथ नवसस्येष्टि करते हैं तथा जैसे दीपक सामर्थ्यानुसार यथाशक्ति अंधेरे से लड़ता रहता है वैसे ही हम भी अज्ञान, अन्याय, अभाव और आलस्य रूपी अंधेरे से हमेशा लड़ते रहें। यह अंधेरा कभी हम पर हावी न होने पाये। जितनी शक्ति हमारे पास है उसी से इन अंधेरों से लड़ने के लिए सर्वदा सन्नद्ध रहें। सद्भावना, श्रद्धा और समर्पण के साथ दीप जलना ही पर्व है। दीपों की अवली=पंक्ति बना देने का नाम दीपावली है। किन्तु बाहर दीपक जलाकर अन्दर अन्धेरा रह गया तो पर्व सफल नहीं हो सकता। पर्व का साफल्य अंधेरे के नाश में है।

हम आर्यों के लिए जहाँ यह पर्व आर्य संस्कृति का परिचायक होने से महत्वपूर्ण है वहीं इस पर्व का महत्व अत्यन्त बढ़ जाता है, क्योंकि इसी दिन सन् 1883 में आर्यसमाज के संस्थापक, आर्यसंस्कृति के प्रचारक, वेद सभ्यता के पुनरूद्धारक महर्षि दयानन्द रूपी महादीपक ने करोड़ों छोटे–छोटे दीपकों को प्रज्ज्वलित करने के उपरान्त निर्वाण को प्राप्त किया था। इस पर्व को हम श्रद्धांजलि दिवस के रूप में भी मनाते हैं। मेरे ऋषि ने मोक्ष की महानतम उपलब्धियों को छोड़कर करोड़ों करोड़ दीन दु:खियों, बिछुड़े–पिछड़े, दलित–वलित नरनारियों के दु:खों को दूर करने के लिए, परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारतमाता के कष्ट को हरने के लिए, स्वनिर्मित मूर्तियों की पूजा में संस्कृति को प्रभुनिर्मित मूर्तियों की पूजा सिखाने के लिए, ईश्वराज्ञा में स्वजीवन को समर्पित कर दिया था। जीवन भर पराये कष्टों को देख कर रोने वाले देव दयानन्द को हमने नहीं समझा और हमारी नासमझी के कारण ही उस देवदूत को सारे जीवन धूल–मिट्टी, कंकर–पत्थर सहना पड़ा और विषपान भी करना पड़ा। जड़ मूर्तियों के उपासक, पत्थरों के पुजारियों के पास पत्थर के अलावा और देने को था भी क्या? बड़प्पन तो उस ऋषि का था जो कहता था–**''मैं तो बाग लगा रहा हूँ, बाग लगाने में माली के सिर पर धूल मिट्टी गिर ही जाया करती है, मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। मैं तो बस इतना चाहता हूँ कि यह बगिया हरी–भरी रहे।''** हे दिव्य देवर्षि! तुम्हें प्रणाम।

जीवन भर तिल–तिलकर जलने वाले इस महादीप की ज्वलित शिखा की जीवन्तता ने करोड़ों लोगों को देदीप्यमान किया और जाते–जाते गुरुदत्त जैसे नास्तिक को आस्तिक बना गया। अहा! यह जीवन, यह दीपन, कितना प्यारा था की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।'' आइए इस महादीप की दीप्ति से दीप्तिमान होकर ऋषि प्रदर्शित मार्ग पर चलकर पिछड़ों के पथपर करोड़ों दीप जलाकर उस ऋषि को सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित करें। यही दीपावली का दीपन, प्रदीपन और उद्दीपन है। आओ दीप जलाएँ साधो! आओ दीप जलाएँ।

आर्य पुत्र श्री पूनम सूरी के नेतृत्व में 8 वर्षों के उपरांत

आर्य समाज (अनारकली) का 89वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 27, 28, 29 सितम्बर को आर्य समाज (अनारकली) का 89वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस उत्सव का सारा श्रेय आदरणीय आनन्द स्वामी जी महाराज के पौत्र डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के नवनिर्वाचित प्रधान श्री पूनम सूरी जी को जाता है। जब उनके संज्ञान में यह विषय आया कि पिछले आठ वर्षों से आर्य समाज (अनारकली) का वार्षिकोत्सव आयोजित नहीं हो रहा है। आपने खेद प्रकट करते हुए इसे इस वर्ष पूर्ण उल्लास के आयोजित करने के आदेश दिए। हमें गर्व है कि आज डी.ए.वी. एवम् प्रादेशिक सभा में आर्य समाज के हितैषी प्रधान आसीन हैं।

शुक्रवार 27 सितम्बर 2013 को प्रातः यज्ञ के उपरान्त विशेष वैदिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. सूर्यदेव धर्माचार्य डी.ए.वी., डॉ. जयेन्द्र शास्त्री, आचार्य गुरुकुल नोएडा एवम् डॉ. वीरेन्द्र विद्यालंकार, प्राध्यापक दयानन्दपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के वैदिक यज्ञ पद्धति पर ओजपूर्ण विचार सुनने को मिले। सायंकालीन सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता के गीता प्रवचन का आयोजन था। शनिवार 28 सितम्बर को प्रातः यज्ञोपरान्त विशेष प्रवचन आज के परिपेक्ष्य में शिक्षा से चरित्र निर्माण विषय पर प्राचार्या श्रीमती अनिता मक्कड़ (डी.ए.वी. गुड़गांव), श्रीमती चित्रा नाकरा (डी.ए.वी. विकासपुरी) एवम् डॉ. प्रो. महावीर जी (कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय) के विचार से सभी ने

लाभ उठाया। सायंकालीन सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार जी द्वारा गीता प्रवचन का कार्यक्रम रहा। रविवार 29 सितम्बर 2013 को यज्ञोपरान्त आचार्य देवव्रत जी ने (अधिष्ठाता गुरुकुल कुरुक्षेत्र) प्राकृतिक जीवन शैली द्वारा आत्मिक उन्नति विषय पर विचार रखें। इसी अवसर पर आदरणीय श्री पूनम सूरी जी ने आर्शीवचन देते हुए वेद मन्त्रों की व्याख्या कर सभी को अचम्भित कर दिया। विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में।

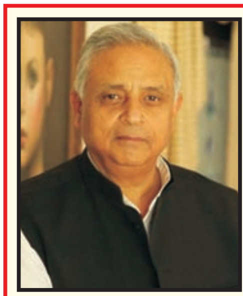

टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव

दिनांक 26, 27, 28, फरवरी 2014

27 फरवरी 2014 को होने वाले मुख्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे।

श्री पूनम सूरी जी

(प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति)

'हंसते रहो'

जो सदा काम करने का पाठ सबको पढ़ाता, जो कभी रोना ना जाने, पर रोतों को हंसा दे,
जो अनेक संकटो में भी रहे हंसता और हंसाता
'आर्य' वही कहलाता

कुछ समय पहले वैज्ञानिकों ने कुछ खिलाड़ियों की हंसी के आधार पर उनकी रैंकिंग की। उनमें से कुछ खिलाड़ी ऐसे थे जो खूब हंसते थे और जी खोल कर हंसते थे। दूसरे कुछ ऐसे थे जो कभी-कभार हंसते थे। लेकिन कुछ खिलाड़ी ऐसे भी थे, जो बिल्कुल ही नहीं हंसते थे।

उनकी जीवन अवधि का अध्ययन करने पर चौंका देने वाले तथ्य सामने आए। जो खिलाड़ी बिलकुल नहीं हंसते थे, उनकी औसत आयु 72.9 वर्ष रही, जबकि जो खिलाड़ी खूब हंसते थे, उनकी औसत आयु 79.9 वर्ष पाई गई। कम हंसने वाले खिलाड़ियों की औसत आयु इन दोनों के बीच की अर्थात् 75 वर्ष के लगभग रही।

हम जितना हँसेंगे, जितना खुशदिल रहेंगे, उतनी ही लंबी उम्र पा सकेंगे और वो भी अच्छे स्वास्थ्य के साथ एक विदेशी विद्वान के अनुसार व्यक्ति का हंसमुख स्वभाव दीर्घायु होने का सर्वोत्तम साधन है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध इस बात की पुष्टि करते हैं। हंसी से न केवल रोग-मुक्ति तथा अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति संभव है, बल्कि अधिक हंसने वाले अपेक्षाकृत दीर्घायु भी होते हैं। हंसना एक संपूर्ण व्यायाम है, जिससे शरीर की सभी नाड़ियां खुलती है। खुलकर हंसने से फेफड़ों, गले और मुंह की अच्छी कसरत हो जाती है। पेट एवं छाती के स्नायु मजबूत होते हैं, डायफ्राम मजबूत होता है और रक्त संचार तेज होता है, जिससे खून में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है।

इसीलिए जो जितना अधिक हंसता-हंसाता है, उसका चेहरा उतना ही अधिक दमकता है, शरीर में जितनी अधिकमात्रा में ऑक्सीजन का अवशोषण होता है, उतनी ही अधिक ऊर्जा उत्पन्न होती है और जितनी अधिक ऊर्जा उत्पन्न होगी, हम उतने ही अधिकस्वस्थ तथा रोगमुक्त होंगे। कुछ समय पहले एकफिल्म मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस. इसीलिए इतनी लोकप्रिय हुई थी। उसमें यह दिखाया गया था कि संजय दत्त कोई असली डाक्टर नहीं था, लेकिन वह मरीजों में हंसी-खुशी पैदा कर उनके भीतर ठीक हो जाने का एहसास भर देता था। यह गलत नहीं है। हंसने और खुश रहने से शरीर के भीतर टी लिंफोसाइटस् अधिक क्रियाशील हो जाते हैं, जिनसे उन प्राकृतिक सेलों के निर्माण में वृद्धि होती है, जिन्हें किलर सेल कहते हैं। ये किलर सेल कैंसर पैदा करने वाले खतरनाक सेलों को मार डालते हैं।

इसके अलावा, हंसने से तनाव उत्पन्न करने वाले हार्मोन कर्टिसोल तथा एपिनाप्राइन के स्तर में भी कमी आती है, जिससे शरीर तनावमुक्त हो जाता है। हंसने से शरीर में एंडोर्फिन नामक हार्मोन की मात्रा में वृद्धि होती है, जो शरीर के लिए स्वाभाविक रूप से दर्द निवारक और रोग अवरोधक का काम करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हंसने से शरीर के लिए उपयोग हार्मोन्स का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है जो हमारे अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। उर्दू शायर 'जफर' गोरखपुरी का एक दोहा है:

'हद से अधिक संजीदगी, सच पूछो तो रोग,
आगा पीछे सोचते, बूढ़े हो गये लोग।'

जो लोग जितने गंभीर बने रहते हैं, उतने ही ज्यादा उम्र के दिखते हैं और उसी के अनुसार उनका उत्साह भी मंद पड़ता जाता है। अतः हंसते रहिए और बुढ़ापे को सदा दूर रखिए। बुढ़ापा को रोकने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन अकेले में हंसने से तथा किसी और पर हंसने के बदले हमें सबके साथ हँसना सीखना चाहिए। बहुत से बॉस अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से हंसी-हंसी में कठिन कार्य करा लेते हैं। एक खुशमिजाज बॉस काम को बोझ नहीं बनने देता। लेकिन हंसी का आनन्द तभी है, जब सुनने वाला भी उसमें हिस्सा ले।

तात्पर्य यही है कि हंसी से सीखते हुए प्रसन्न रहना सीखो, हर परिस्थिति में प्रसन्न रहो, खुश रहो, परेशानी में भी प्रसन्न रहना सीख लेना एक कला है। जो हंसते-हंसते ही सीखी जा सकती है प्रसन्न रहना अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बना लेना ही सच में जीवन जीने की कला है। प्रसन्न रहने वाला व्यक्तित्व आत्म विश्वास से परिपूर्ण होता है और जीवन में आने वाले दुःखों और परेशानियों को हंसते-हंसते झेल लेता है। ऐसा व्यक्ति ही दूसरो के दुःखो को दूर कर औरों को भी हंसा सुखी कर सकता है, जो स्वयं ही दुखी है और अपने दुःख को ही नहीं समझे सकता वह दूसरे की क्या सहायता करेगा। इसीलिए हम करते है जो व्यक्ति दुःख में भी हंसता और औरो को हंसाता है वही सच्चा मानव है। किसी ने खूब लिखा है 'खुद जियो औरो को भी जीने दो'। दुःखी लोगों के लिए निम्नलिखित साधारण सा वाक्य शयद कमाल कर सके। 'सब ठीक है और कोई फर्क नहीं पड़ता। (Everything is ok and Nothing Matters)

इसलिए खूब हंसो लेकिन किसी पर मत हंसो स्वयं पर हंसना सीखो, क्योंकि किसी फिल्मी शायर ने खूब लिखा है **''किसी की मुस्कराहटों पर हो निसार, किसी का दर्द ले सके तो ले उधार जीना इसी का नाम है।''**

अजय टंकारावाला

टंकारा समाचार
का आगामी अंक 200वां अंक होगा

आप सभी पाठकों से अभुतपूर्व सहयोग एवम आशीर्वाद के फलस्वरूप टंकारा समाचार अपने 16वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है और नवम्बर 2013 का 200वां अंक विशेष सामग्री के साथ प्रकाशित किया जाएगा।

सभी सहयोगी, विद्वान लेखकों से अनुरोध है कि वे अपनी लेखनी से जो अभी तक अप्रकाशित हो सामग्री भेजने की कृपा करें। क्योंकि आपके सहयोग के बिना 16 वर्ष लम्बी यात्रा को सफलतापूर्वक पूर्ण कर पाना हमारे लिए सम्भव नहीं था। यहां विशेष रूप से पाठको से अनुरोध है कि वे टंकारा समाचार के साथ 16 वर्षों के अपने संमरणों को भेजने की कृपा करें। **- संपादक अजय टंकारावाला**

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि

❐ स्व. क्षितीश वेदालंकार

चिर-कालीन विवाद है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास है, या परिस्थितियों का निर्माता है। दोनों बातें अपनी-अपनी जगह ठीक हैं। पर दोनों में एक महान अन्तर भी है। वह अन्तर यह है कि सामान्य मनुष्य प्रवाह में पड़े तिनके की तरह समय और परिस्थिति की धारा में बहता जाता है, पर महापुरुष वह होता है जो धारा से उलटा चल कर समय को नया मोड़ देता है। इसीलिए कहावत है-

लोग कहते हैं कि बदलता है जमाना अकसर।
मगर मर्द वो हैं जो जमाने को बदल देते हैं॥

परन्तु प्रश्न यह है कि क्या जमाने को सर्वथा बदला जा सकता है? सर्वथा या हमेशा के लिए जमाने को बदलने की शक्ति किसमें होती है? जमाने की एक रफ्तार होती है जिससे चलना उसकी नियति कहा जा सकता है, पर यही शाश्वत सत्य नहीं है। शाश्वत सत्य यह है कि जमाने में हमेशा ही भली और बुरी दोनों प्रवृत्तियां रहती हैं उन दोनों का संघर्ष भी चलता रहता है। कभी एक प्रवृत्ति हावी हो जाती है और कभी दूसरी। दोनों का समूल नाश कभी नहीं होता दोनों की मात्रा घटती बढ़ती रहती है। परन्तु महत्त्व की बात यह है कि इतिहास में कालजयी वही बनते हैं जो सही प्रवृत्तियों का पक्ष लेते हैं और उसके लिए अपना पूरा जीवन लगा देते हैं, भले ही ऐसा करते हुए कितने ही कष्ट क्यों न उठाने पड़ें! क्यों न इन्हें अपना बलिदान तक करना पड़े!

इसको दार्शनिक दृष्टि से कहना हो तो यों कहा जा सकता है कि प्रकृति त्रिगुणात्मक होती है-सत्त्व, रज और तम, तीनों उसके गुण हैं। संसार क्योंकि प्रकृति की ही देन है, इसलिए उसमें भी सात्विक, राजसिक और तामसिक प्रवृत्तियों का समावेश रहता है। संसार का अंग होने के कारण मानवमात्र में ये तीनों गुण होते हैं। तामसी प्रवृत्ति उसे पशुता की ओर ले जाती है, सात्विक प्रवृत्ति उसे देवत्व की ओर ले जाती है, और राजसी प्रवृत्ति उसे गतिशील बनाती है। यह गतिशीलता उसे सात्विक और तामसिक दोनों प्रवृत्तियों की ओर जाने की छूट के साथ उग्रता प्रदान करती है। राजसी प्रवृत्ति तमस् की ओर जायेगी तो उग्रता के साथ। और सत्य की ओर जायेगी तो भी उग्रता के साथ, यह उसके स्वभाव का अंग बन जाती है।

संसार का चरित्र भी ऐसा है कि उसमें सदा देवासुर-संग्राम चलता ही रहता है। जब दैवी शक्ति वाले प्रबल हो जाते हैं तो देव विजयी होते हैं, और जब आसुरी शक्ति वाले प्रबल हो जाते हैं तो असुर विजयी हो जाते हैं। यही सृष्टि का क्रम है, यह क्रम चलता रहता है, चलता रहेगा। सृष्टि के इस विकास-क्रम में एक रहस्य और भी छिपा है, और वह यह है कि आसुरी शक्ति को फैलाने के लिए विशेष श्रम की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु दैवी शक्ति को फैलाने के लिए श्रम भी चाहिए, साधना भी और साहस भी। वही प्रवाह में पड़े तिनके वाली बात। सामान्य मनुष्य केवल तिनका बन कर रह जाता है, जबकि महापुरुष वह कहलाता है, जो अपने साहस से समय के प्रवाह को मोड़ देता है। इतिहास उन्हीं को स्मरण करता है। सच तो यह है कि संसार ऐसे ही मनस्वी और ऊर्जस्वी पुरुषों के कारण जीने के योग्य बनता है, नहीं तो केवल आसुरी संसार में कौन भला मानस जीना चाहेगा, असुर उस भले मानस को जीने ही क्यों देंगे?

आज की सबसे बड़ी समस्या यह नहीं है कि संसार में भले मानसों की एकदम कमी है। असली समस्या यह है कि संसार भर के भले मानस बिखरे हुए हैं, असंगठित है, जबकि तथाकथित आसुरी प्रवृत्ति वाले दुर्जन संगठित हैं। स्वर्ण और मादक द्रव्यों की तस्करी करने वालों के अत्यन्त संगठित अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह हैं, मुर्दाफरोशों के अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह हैं, गुण्डों और डाकुओं के संगठित गिरोह हैं, राष्ट्र विरोधी, समाज-द्रोही, अलगाववादी, सम्प्रदायवादी, विघटनकारी आतंकवादियों के संगठित गिरोह हैं। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि शान्तिप्रिय, राष्ट्रवादी, सहिष्णुताप्रिय, भलाई और सत्य के उपासक लोग सर्वथा असंगठित हैं। वे वर्गों, जातियों, बिरादरियों में बंटे हुए हैं और यह संतोष करके बैठे हैं कि जब संसार के पाप का घड़ा भर जायेगा तो एक दिन स्वयं परमात्मा अवतार लेंगे, और सब दस्युओं का नाश कर देंगे। इस खुशफहमी से बढ़ कर कायरता और कुछ नहीं हो सकती।

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।

हे प्रभो! तुम तेजस्वरूप हो, मुझे भी तेजस्वी बनाओ। तुम वीर्यवान् हो, मुझे भी वीर बनाओ। तुम बलधारी हो, मुझे भी बलवान बनाओ। तुम ओजस्वरूप हो, मुझे भी ओजस्वी बनाओ। तुम मन्युस्वरूप हो, मुझे भी सात्विक क्रोध दो। तुम सहिष्णु हो, मुझे भी सहिष्णु बनाओ।

-गोपालदास गुप्त

'सत्यमेव जयते' का सिद्धान्त सही है। **'यतो धर्मस्ततो जयः'** का सिद्धान्त भी ठीक हैं। पर जिस सत्य और धर्म के पीछे बल और तेज नहीं है, वह सत्य और धर्म कभी विजयी नहीं होता, वह सदा पराजित होता है। यह यही है कि असत्य के पांव नहीं होते, पर सत्य के उपासक उस असत्य का प्रतिरोध करने के लिए ऐक्यबद्ध तो हों, संगठित तो हों। जिस दिन देवता संगठित हो जाएंगे उस दिन राक्षसों की पराजय अवश्यम्भावी है। पर देवता संगठित हों तो सही!

आज देश विघटन के जिस कगार पर पहुंच गया है, उससे उसे बचाने के लिए ऐसे ही महापुरुषों की आवश्यकता है, जो स्वयं तेजस्वी हों और राष्ट्रवादी भले-मानसों को अपने तेज से इतना चमका दें कि उनकी चकाचौंध के सामने तमस् और असत्य के उपासक ठहर न सकें। इसके लिए आसमान से फरिश्ते उतर कर नहीं आएंगे। तेज और ओज के पुंज स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महापुरुष ही राष्ट्र को पैदा करने होंगे। सत्यविहीन बल असुरों के पास है, और बलशून्य सत्य देवताओं के पास है। अन्त में, अन्त उसी का होना है जो सत्य का विरोधी है। देवताओं की विजय करनी है तो सत्य को बल-शून्य मत रहने दो, राष्ट्र की आज की समस्याओं का यही समाधान है।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

राष्ट्र पुरुष–श्रीराम और माता कैकेयी

❒ स्व. मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

महाभारत में 'आर्य' शब्द के संबंध में इस प्रकार कहा गया है
शान्ततितिक्षर्दान्तश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः।
दाता दयालु नम्रश्च आर्यस्याहढ़ मिर्णमी।

पदार्थ–शांतः=शांति से परिपूर्ण। तितिक्ष=अपार सहिष्णु। दान्तः=मन का स्वामी। सत्यवादी= जैसा मन में हो, वैसा ही वाणी से बोले जो बोले तदनुसार आचरण। कर्म करे, सत्यार्थी जितेन्द्रिय=इन्द्र, इन्द्रियों का शासक। दाता=दानशील, दयालु=कृपा और न्याय कारक। नम्रता=सक्षम होने पर भी विनम्र और मीठा व्यवहार करने वाला।

व्याकरण की दृष्टि से ऋ गतौ से' ऋहलोर्ण्यत्' इस सूत्र के अनुसार ण्यत् प्रत्यय करने पर 'आर्य' शब्द बनता है। इसे कुल,'शील, दया, दान, आदि परिभाषित किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त आठ गुणों को धारण करने वाले को आर्य कहा है। यह श्रेष्ठतम है ऋग्वेद 7.63.5 में स्पष्ट कहा है-**इन्द्र वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** परम पिता परमात्मा का आदेश है–आलसी मत बनो, वैदिक कर्मों के करने कराने वाले बनो। कंजूस, स्वार्थी, पापियों को परे हटा लें, सारे संसार को वेदानुकूल चलाने वाला आर्य, परमेश्वर का भक्त होता है। सारे संसार को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेकर स्वयं प्रथम श्रेष्ठ आर्य बनो।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम को आर्य श्रेष्ठ पुरुष इसीलिए कहा जाता कि क्षत्रिय कुल (सूर्यवंश) में जन्म लेकर, सम्राट दशरथ के वैभवपूर्ण परिवेश में भी रहकर भी उनमें आर्यत्व के सभी गुण विद्यमान थे। इनकी माता 'कौशल्या' भी आर्य परिवार की सुशील और धार्मिक मनोवृतिं वाली थी। विवाह के पूर्व इन्होंने राजा दशरथ के सम्मुख ऋषिकाओं जैसे विचार प्रस्तुत किये थे। वे प्रेय मार्ग की अपेक्षा श्रेय मार्ग की अनुयायी थी। विवाहित होने के पश्चात भोगवाद को तिलाञ्जलि देकर केवल एक ही संतान को जन्म देकर अपने अभिवचन का निर्वाह किया था। ऐसी ऋषिका सत्य श्रेष्ठ माता का पुत्र अपने श्रेष्ठतम प्रारब्धों के कारण जन्म लेने के पश्चात 'आर्य' ही बनेगा। एक बार प्रसंगवश महर्षि वाल्मीकि कि जी ने घुमक्कड़ नारदजी से सहज ही पूछ लिया– इस समग्र संसार में इन गुणों को धारण करने वाला कौन है? 1. संसार में गुणवान, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवक्ता और अपने वक्ष में दृढ़ पुरुष कौन है? 2. सदाचार से युक्त, सर्व प्राणियों के कल्याण में तत्पर, विद्वान, सामर्थ्यशाली और देखने में सबसे सुन्दर पुरुष कौन है? जिसका व्यक्तित्व प्रभावशाली है? 3. जो तपस्वी तो हो, किन्तु क्रोधी न हो। मन्यु गुणधारक हो। 4. तपस्वी तो हो परन्तु, ईर्ष्यालु न हो। उसके मुख मण्डल पर आभा हो। 5. दया, अक्रोध आदि गुण होते हुए भी जब रोष आ जाये तब जिसके सामने देवजन भी कांपने लगे।

इन पांचों प्रश्नों को सुनकर देवराज नारद भी सोच में पड़े गये। उनके मस्तक पर भी बल पड़ गये। कुछ समय तक मौन रहकर, गहरे चिन्तन के पश्चात नारदजी ने महर्षि बाल्मीकि को यह उत्तर दिया–अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुआ 'राम' नाम से जो प्रसिद्ध राजा राज्य करता है, वह उन सब गुणों से युक्त है जिनका आपने उल्लेख किया है। हमारे विद्वान पाठकों को यह जानकर आश्चर्य मिश्रित हर्ष होगा कि महर्षि वाल्मीकि ने अपनी 'रामायण' में उपर्युक्त सर्वप्रश्नों का विस्तार से उत्तर दिया है। उन्होंने रामायण संस्कृत भाषा में लिखी है।

वस्तुतः राम विविध व्यक्तित्व धारण करने वाले व्यक्ति थे। उनमें कुछ ऐसे भी महानगुण थे, जो सामान्य राजा या सम्राट में नहीं पाये जाते। वे ऐसे वीतराग व्यक्ति थे, जिन्हें स्थित–प्रज्ञ ही कहा जा सकता है। राज्याभिषेक हेतु बुलाये गये और वन के लिए किये हुए रामचन्द्र के मुख के आकार के संबंध में महर्षि वाल्मीकि ने कहा है–

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्य स्वल्योऽप्याकार विभ्रम।।

अर्थात्–राम का व्यक्तित्व इतना निस्पृह था कि राज्याभिषेक हेतु बुलाये गये और वन के लिए विदा किये हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में मैंने कुछ भी असर नहीं देखा। इस श्लोक का महत्व इसलिए भी है कि राज्याभिषेक के समाचार सुनकर राम के मुंह पर न तो विशेष प्रसन्नता, मुस्कारहट तथा क्रांति थी औ जब माता कैकेयी ने राजा की ओर से उन्हें चतुर्दश (14) वर्ष के लिए वनवास तथा भरत को राज सिंहासन पर बैठाने की बात कही, तब इन दोनों बातों को सुनने के पश्चात् राम के मुंह मण्डल पर न तो क्रोध, आवेश तथा क्रोध के कारण आंखे लाल–लात दिखाई न पड़ी। साथ ही वन गमन तथा चतुर्दश वर्ष जैसी लम्बी अवधि को सुनकर उन्हें न लोभ सताया और न ही की कीर्ति (चमक) ही कम हुई। उन्होंने अपने दोनों निश्चय पलकें झुकाकर तथा माता कैकेयी को प्रणाम कर राज महल से प्रस्थित हो गये।

कवि महर्षि वाल्मीकी का यह कितना सुन्दर, सूक्ष्म तथा यथार्थ चित्रण है। क्योंकि हृदय के विषाद या प्रसुद की तरंगों के अनुसार ही उसका भाव मुख मण्डल पर तत्काल झलकने लग जाता है। चेहरा ही हृदय का दर्पण होता है।

भारतीय हिन्दी साहित्य तथा संस्कृत ग्रंथों में वाल्मीकि रामायण का इस कारण सर्वाधिक महत्व है कि राम के हजारों वर्ष पूर्व महर्षि अगस्त्य दक्षिण की ओर वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रचार करने व्दीप–द्वीदपांतरों में गये थे। इतनी लम्बी अवधि के पश्चात राम ने उत्तर से दक्षिण तक, हिमलय से लेकर सुदूर विन्ध्याचल पर्वत–कारामंडल कन्याकुमारी तक भारत को एक करने का प्रयत्न किया था। राम का यह अभियान सामरिक नहीं किंतु सांस्कृतिक था। तत्कालीन भारत से लेकर गोदावरी नाशिक–महाराष्ट्र तक भारतीय संस्कृत विद्यामान थी। इसके पश्चात् इसके दक्षिण में रस–संस्कृति या राक्षस–संस्कृति–भोगवादी संस्कृति और अनार्यसभ्यता व्याप्त थी। रावण, बालि आदि इसके प्रमुख स्तम्भ थे। बालि भोग–विलास में निमग्न होकर अपने अनुज सुग्रीव का शत्रु बन गया था। इधर जटायु आदि छोटे, छोटे वैदिक संस्कृति के अनुयायी थे तथा राजा दशरथ के पुराने मित्र थे।

राम कथा में एक मोड़ कैकयी के कारण आ गया। राम–वन गमन में सीता तथा लक्ष्मण के कारण एक नया अध्याय जुड़ गया। ताड़का और शुर्पणखा सीता के अपहरण मारीच का विशेष सहयोग रहा। राम–रावण के युद्ध के पश्चात लंका का राज्य उसके भाई विभीषण को दे दिया गया। बालि का वध कर उसके भाई सुग्रीव को सौंप दिया। वैदिक संस्कृति साम्राज्यवादी कभी नहीं रही। पीड़ियों की रक्षा कर हटाना पुनीत कर्त्तव्य माना गया है। इसी तारातम्य में हम यहाँ के किसी

के संबध में पाठकों को एक नई वैचारिक सामग्री प्रस्तुत कर रहे है जो कि महत्वपूर्ण है।

वस्तुतः राजा दशरथ की तीनों रानियों में से कैकयी विशेष प्रतिभशाली थी। वह न केवल कौशलमय अपितु सम्पूर्ण भारत को रक्ष-संस्कृति से रहित, एक सर्व प्रभुत्व सम्पन्न बनाना चाहती थी। इतना ही नहीं 'वह 'आर्यावर्त' को समुन्नत और गौरवपूर्ण राष्ट्र का रूप देना चाहती थी। कैकयी की राष्ट्र योजना-वह राजा दशरथ की राज्य क्षमता और बुद्धि से परिचित थी। वे रावण तथा बालि से भयभीत रहते थे। उनके राज्य का भविष्य अंधकामय था। कैकेयी कौसल राज्य को सुदृढ़, शुभ-रहित, उन्नति शील तथा सबल बनाना चाहती थी। मुझे राम से अनेक आशाएं थी विश्वामित्र के आश्रमों में उन्होंने अखंड सबल राष्ट्र, शत्रुओं से रहित राष्ट्र तथा बाह्य एवं आन्तरिक सुरक्षा वाला राज्य सुखी प्रजा तथा वैदिक संस्कृति पर आधारित राज्य व्यवस्था स्थापित करने की शिक्षा दी गई थी। ऋषि विश्वामित्र ने उन्हें युद्ध करने की विविध कलाओं से प्रशिक्षित कर दिया था। राम स्वयं ब्रह्म और क्षत्रिय शक्ति के समुन्नय के घोर प्रशंसक थे। त्याग, परिश्रम, तप के पश्चात ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है।

महारानी कैकेयी ने 'राम' के सम्मुख सारी स्थितियां बुद्धि मानी सहित प्रस्तुत कर दी थी। राम को तो केवल उनका अभिनय करना था। वे सफल हुए। क्या दशरथ परिवार में कैकेयी एक पहेली थी?

राजा दशरथ तथा राम से संबंधित साहित्य को तटस्थ भाव से पढ़कर चिन्तन करें तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि कैकेयी एक ऐसे परिवार अश्वपति की पुत्री थी, जहां राजकुमारों तथा राज कुमारियों को धर्म, नीति, शुद्ध कला-कौशल तथा रण क्षेत्र में भी उपकार शुद्ध करने की विद्या सिखाई जाती थी। राजा दशरथ से विवाह होने के पश्चात उसे अपने पति के राज्य की रक्षा, उन्नति एवं प्रजा को सुखी बनाने की चिन्ता सदैव बनी रहती थी। वह चारों राज कुमारों, को किशोरावस्था से क्षात्र-धर्म की शिक्षा देना चाहती थी। इसके लिए वह स्वयं कई-कई बार अयोध्या के निकट खुले मैदानों में अस्त्र-शस्त्र-विद्या सिखाती थी। रघुकुल में इसका निषेध था। उन दिनों अयोध्या चारों ओर से राजाओं, वनचरों, हत्यारों तथा वैदिक संस्कृति के विरोधी राक्षसों से घिरा हुआ था। सुदूर दक्षिण में बालि उनका विरोधी थी। उसके ही सहयोग से लंका नरेश रावण की सेनाएं गोदावरी आदि के निकट तक आ पहुंची थी। वनों में निवास कर रहे ऋषि मुनियों के स्वाध्याय, तप तथा यज्ञादि कार्यो राक्षस संस्कृति मानने वाले राक्षस नष्ट कर देते थे। राक्षसों से त्रस्त-ऋषि मुनि राजा-दशरथ से उनकी सभा हेतु आर्त-भाव से निवेदन कर रहे थे। ऐसे गंभीर समय में राजा दशरथ ने कुल गुरु वशिष्ठ जी को सादर आमंत्रित किया। गुरु वशिष्ठ स्वयं राजा के निमन्त्रण की प्रतीक्षा कर रहे थे। राजा का निमत्रण प्राप्त होते ही गुरु वशिष्ठ ने भी ऋषियों के कष्टों तथा राक्षासों के उपद्रव तथा अयोध्या राज्य की सीमा की रक्षा के लिए चिंता प्रकट की। कुल गुरु वशिष्ठ जी ने राजा से उनके दो किशोर राजकुमारों राम और लक्ष्मण को साथ ले जाने, प्रशिक्षित करने तथा राक्षसों से राज्य-सीमा सुरक्षित करने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने विश्वामित्र को सादर आमंत्रण भिजवाया। वे चारों राजकुमार को वन में सैन्य शिक्षा हेतु ले गये।

कैकेयी एक पहेली- नीति के अन्तर्गत राम को वन गमन कराने में उसकी एक दूरदर्शीकीर्ति, अयोध्याराज्य की बाहरी शत्रुओं से रक्षा तथा कालान्तर में राम को राजा बनाकर वैदिक राजनीति के सिध्दान्तानुसार अखंड तथा सर्व प्रभुत्व सम्पन्न राज्य स्थापित करना था। भला, क्या यह चिंतन दोषपूर्ण था? नहीं।

मानवीय मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के शुक्ल और कृष्ण पक्ष होते हैं। हमारे मन की यह दुर्बलता है कि हम सदैव शुक्ल की अपेक्षा कृष्ण पक्ष पर विचार कर केवल उस पर दृढ़ हो जाते हैं। मंथरा, कैकेयी आदि के चरित्र-चित्रण पर तटस्थ रहकर विचार करने की आवश्यकता है। राम की अपेक्षा भरत को अयोध्या की बागडोर सौंप देने पर क्या। राम राज्य में दिखाई पड़ने वाली विशेषताएं आज पढ़ने को मिल सकती थी? कैकेयी तो 'भरत' को केवल प्रतीक रूप में राजा बनाने का प्रस्ताव रखा था। यदि भरत राजगद्दी पर आसीन भी हो जाते तो राज्य की सभी व्यवस्था के पृष्ठ भाग में रहकर कैकेयी ही, संभालती। महारानी, कौशल्या और सुमित्रा सो राजमहल की शोभा थी, जिसमें कौशल्या का गुण, कर्म और स्वमाव प्रेय की अपेक्षा श्रेय भाव की ओर ही अधिक था जिसका वर्णन उन्होंने विवाह के पूर्व दशरथ को दिया था। सुमित्रा भी एक आदर्श आर्य पत्नी थी। – इन्दौर, म.प्र.

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

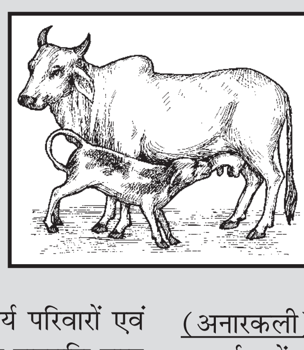

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

वाल्मीकि-रामायण में वैदिक वर्णव्यवस्था

❒ डॉ. वेद प्रकाश वेदालंकार विद्यावाचस्पति

वाल्मीकि रामायण भारत का राष्ट्रीय आदिकाव्य है। वैदिक वर्णव्यवस्था का स्वर्णयुग इसमें प्रतिबिम्बित है। वेदों तथा समस्त वैदिक वाङ्मय के अनुशीलन से परिज्ञात होता है कि, वैदिक काल में वर्णव्यवस्था का स्वरूप अपने शुद्धतम रूप में विद्यमान थी। वर्णव्यवस्था के माध्यम से उसके विभाजक तत्त्व जनता को विभक्त नहीं करते थे। उस युग में वर्गजात का कोई प्रश्न नहीं था। यही कारण है कि ऋग्वेद (10.191/3.4) आदेश देता है कि तुम्हारी मंत्रणा में, समितियों में विचारों और चिन्तन में समानता हो, सद्भावना हो, वैषम्य या दुर्भावना न हो-

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥
समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

समष्टि भावना से युक्त होकर वैदिक ऋषि अपने अपने नियत कर्तव्य-पालन पर बल देते रहे हैं-यजुर्वेद में उल्लेख आता है-

ब्रह्मणे ब्रह्मणं क्षत्राय राजन्यं, मरूद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रम्। (यजुर्वेद 30.5) यहाँ ब्रह्म-कृत्यों के लिए ब्राह्मण, राजकृत्यों के लिए क्षत्रिय, व्यापार-कृषिकर्म के लिए वैश्य और सेवा तथा तपस्या के लिए शूद्र को माना गया है। जब ये सभी वर्ण मिलकर, अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं, तभी सम्पूर्ण उन्नति सम्भव है। यजुर्वेद में कहा है-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च उभौ संचरतः सह।
तं देशं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥

इन वैदिक मन्त्रों में सभी वर्णो की सहचारिता और सामंजस्य को राष्ट्रोन्नति मूलक माना गया है। वेद के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ में ही प्रजाओं के हित सम्पादक के लिए एक शाश्वत मर्यादा का प्रादुर्भाव स्वयं भगवान् प्रजापति ने किया। जैसे हमारे शरीर में मुख, बाहु-ऊरु और पैर ये चार प्रमुख अंग हैं, वैसे ही समाज रूपी शरीर के निर्वहन के लिए चार वर्ण-अंग विशेष हैं। इन चार वर्णो में वेद ने विद्या के अध्ययन-अध्यापन में कुशल ज्ञान-विज्ञान के प्रसारक, धर्मशास्त्र के प्रवर्तक, राज्य नियमों के व्यवस्थापक, विधिविधान के ज्ञाता, ब्रह्मतेज सम्पन्न, राष्ट्रनीति के निर्धारक तथा प्रजा के प्रणेता को -'ब्राह्मणोस्य मुखमासीत्' कथन द्वारा ब्राह्मण की संज्ञा दी है।

राष्ट्र रक्षा के व्रती, राज्यपाल, राष्ट्रपति, सकलशास्त्रों के पारंगत, शास्त्रस्त्र विद्यानिपुण, वीर, शासक, न्यायाधीश, नीति कुशल, राष्ट्रनीति संचालक, लोक रक्षक को बाहू राजन्यः कृतः कहकर 'क्षत्रिय' माना है। व्यापार वृत्ति में निपुण, आर्य शास्त्र के पण्डित, धनोत्पादन में कुशल, कृषि विशेषज्ञ, खनिज शास्त्र पारंगत, राष्ट्रसंपत्ति वर्धक, दानशील, शिल्पकला निष्णात, समस्त शास्त्रस्त्र निर्माता, धनधान्य सम्पन्न, राष्ट्रहित में सम्पत्ति समर्पित करने वाले उद्यमशील वैश्य को ''ऊरूतदस्य यद् वैश्यः इस सम्बोधन से अभिहित किया है।

अनवरत गतिशील, सेवापरायण, शक्ति भक्ति सम्पन्न, स्वामीभक्ति, विनम्र, भारधारक गुणों वाले शूद्र को=पद्भ्यां शूद्रोऽजायत' कहा है। ऋषि दयानन्द जी ने शूद्र का अर्थ इस प्रकार किया है-जो विद्याहीन, जिसको पढ़ने से भी विद्या न आ सके, शरीर से पुष्ट, सेवा में कुशल हो वह शूद्र। (संस्कार विधि गृहस्था श्रम प्रकरण) अथवा जो मूर्खादि गुणवाला हो वह शूद्र है। (सत्यार्थ प्रकाश-चतुर्थ समुल्लास)।

इस वैदिक वर्णव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुण-कर्म-स्वभाव रूचि के अनुसार अपने वर्ण को चुनने की व्यवस्था है-**वर्णो: वृणोते:** (निरूक्त 2/3), वह तदनुसार कर्त्तव्य का पालन करता है। इसी तथ्य को गीता में **चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः** द्वारा पुष्ट किया गया है। (गीता अध्याय 4.9 लोक 13) वैदिक वर्ण व्यवस्था में लचीलापन है। सभी-वर्ण अपनी अपनी जगह पर खूँटे की तरह गड़े हुवे नहीं हैं। कोई भी वर्ण नीचे से ऊपर उठ सकता है, और इसके विपरीत किसी भी उच्च कहे जाने वाले वर्ण का पतन भी हो सकता है। आचार को प्रथम मानकर वेदों ने प्रत्येक वर्ण (व्यक्ति) को ऊपर उठने की पूरी स्वतन्त्रता दी है-

''आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम्'' (अथर्ववेद 3.30.7) ब्राह्मण सदा ब्राह्मण ही बना रहे और शूद्र सदा शूद्र ही बना रहे-ऐसा कठोर बन्धन वैदिक नहीं है। ब्राह्मण वर्ग के प्रति उदारता और शूद्र वर्ण के प्रति निर्ममता वैदिक वर्ण व्यवस्था का अंग नहीं थी।

इस व्यवस्था में राज्यशासन की प्रभुता क्षत्रियों के हाथ में रहती थी और वे राजनीति के ज्ञाता ब्राह्मणों के निर्देश पर अपनी प्रभुता शक्ति का प्रयोग करते थे। वैश्य जन ब्राह्मणों से ज्ञान सीखकर तथा क्षत्रियों की रक्षा में रहकर, भौतिक सम्पत्ति को पैदा करने थे। शूद्र इन तीनों वर्णों की सेवा में तत्पर रहते थे। ब्राह्मणों का ज्ञान, क्षत्रियों की शक्ति, और वैश्यों की सम्पत्ति राष्ट्रहित में खर्च होती थी। सभी वर्ण स्वयं को राष्ट्र का न्यासरक्षक (ट्रस्टी) समझते थे। (मेराधर्म आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति पृष्ठ 82)

वैदिक वर्णव्यवस्था की यह मर्यादा वाल्मीकि रामायण में प्रतिपद परिलक्षित होती है। इसके परिक्षण और स्थिरीकरण के प्रति वाल्मीकि-रामायण में अत्यन्त कठोर नियम थे। इसका प्रमुख कारण यह था कि तत्कालीन समाज एक ऐसी सुदृढ़ व्यवस्था पर आधारित था जो वेदसम्मत था। महाराजा दशरथ एवं श्रीरामचन्द्र स्वयं वेद वेदांगों के ज्ञाता थे।

तस्यां पुर्यामयोध्यायां वेदवित् सर्वसंग्रहः।
दीर्घदर्शी महातेजाः पौरजानपद प्रियः॥
यथा मनु महि तेजा तेजा लोकस्य परिरक्षिता।
तथा दशरथो राजा लोकस्य परिरक्षिता॥

(बालकाण्ड सर्व. 6, श्लोक 1.4)

श्रीरामचन्द्र जी के विषय में कथन है-

रधिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य रक्षिता।
वेद वेदांग तत्त्वज्ञो धनुर्वेद च निष्ठितः॥

(बालकाण्ड सर्ग-1, श्लोक 4)

यजुर्वेद विनीत वेदविद्भिः सुपूजितः।
धनुर्वेद च वेदे च वेदांगेषु च निष्ठितः॥

(सुन्दरकाण्ड, स्वर्ग 35, श्लोक 14)

श्री राम का राज्य अभिषेक, वेदपाठी वशिष्ठ आदि महर्षियों ने ही सम्पन्न कराया था-जिसमें सभी वर्ण हर्षित होकर सम्मिलित हुए थे।

ऋत्विग्भिः ब्राह्मणैः पूर्व कन्याभिः मं त्रिभिस्तथा।
यौधैश्चैवाम्यर्षिच स्तेसंप्रद दृष्टैः स नैगमैः।

प्रथम ऋत्विक ब्राह्मणों ने उसक पीछे कन्याओं ने फिर मंत्री, योद्धागण, पुरवासी और वैश्यों ने हर्षित मन से श्रीराम चन्द्र जी का

अभिषेक किया। इसी प्रकार राम के ही राज्याभिषेक हेतु उसके गुण वर्णन में वाल्मीकि लिखते हैं-

बहुश्रुतानां वृद्धानां ब्राह्मणानामुपासिता।
तेनास्येहाऽतुला कीर्तिर्यशश्चस्तेजश्चवर्धते।।
देवासुर मनुष्याणां सर्वशास्त्रेषु विशारदः।
सम्यक् विद्याव्रत स्नातो यथावत् सांगवेदवित्।।

(अयोध्याकाण्ड सर्ग-2, श्लोक 33.34)

स्वामिभक्त हनुमान भी वेदनिष्णात थे। सुग्रीव के मन्त्री हनुमान के विषय में श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं-

नानृग्वेद विनीतस्य नायजुर्वेद धारिणः।
नसामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्।।

(किष्किधाकाण्ड, सर्ग-1, श्लोक 28)

रामायण का जनसामान्य वेदानुकूल वर्णों और आश्रमों में विभक्त होता हुआ सहयोग और सौहार्द के तन्तुओं से परस्पर अनुस्यूत था। इसमें ब्राह्मणों को बौद्धिक एवं आध्यात्मिक योग्यता के कारण असाधारण सम्मान एवं विशेषाधिकार प्राप्त थे। क्षत्रिय उनका वर्चस्व स्वीकार करते थे। वे नीति-परम्परा के अनुसार राष्ट्र का संचालन करते थे। वेद का यह राष्ट्रीय प्रार्थना मंत्र-**ओं आब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधि महारथो जायताम्''।** उस काल में पूर्ण चरितार्थ था। वैश्य वाणिज्य व्यापार द्वारा राष्ट्रीय समृद्धि में योगदान करने और शूद्र अन्य वर्णो की सेवा में लगे रहते थे।

वर्गेष्वभ्रय चतुर्थेषु देवतातिथि पूजकरः।
कृतज्ञाश्च वदान्याश्च शूराः विक्रम संयुताः।।

(बालकाण्ड सर्ग 6.9 श्लोक 17)

ब्राह्मणादि चारों वर्ण देवता और अतिथि की पूजा करते थे, सभी कृतज्ञ दाता और शूर थे।

क्षर्ण ब्रह्ममुखं चासीद् वैश्याः थगमनुव्रताः।
शूद्राः स्वकर्मनिरताः गीन वर्णानुपचारिणः।।

(बाल. सर्ग-6, श्लोक 19)

श्रीराम स्वयं धर्मचारिणी शूद्रा शबरी को मिलने उनके पास जाते हैं-

सोऽभ्यगच्छत् महातेजाः शबरी शत्रुसूदनः।
शबर्या पूजितःसम्यक् रामो दशरथात्मजः।।

(बाल. सर्ग-1, श्लोक 57)

महाराजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ में भी सभी वर्णो को समान-सम्मान के साथ आमन्त्रित किया गया-

ततः सुमन्त्रमाहूय वसिष्ठो वाक्य मब्रवीत्।
निमन्त्रयस्व नृपतीन पृथिव्यां ये च धार्मिकाः।।
ब्राह्मणान् अगिर्यन वैश्या न शूद्रांश्यैव सहसग्रशः।।

(बाल. सर्ग-13, श्लोक 20)

ततो वाष्ठि प्रमुखाः सर्व एव द्विजोत्तमाः।
ऋष्यश्रृंगं पुरस्कृत्य यज्ञकर्मारऽमनतदा।।

(वही, श्लोक 41)

तत्कालीन ब्राह्मणवर्ण धन वैभ्ज्ञव का आकांक्षी नहीं था। राजा दशरथ द्वारा ऋषियों को दान में दी गई पृथ्वी को वे स्वीकार नहीं करते हैं। महाराज दशरथ से कहते हैं-

भानेव महीं कृत्स्नामेको रक्षितुमर्हति।
न भूम्या काम्यमस्माकं न हि शक्ताः स्म पालने।।

(बालकाण्ड, सर्ग-13, श्लोक 47)

अर्थात् हे राजेन्द्र नाथ आप एकाकी इस समस्त भूमण्डल की रक्षा करने योग्य है, हमें पृथ्वी नहीं चाहिए। क्योंकि हम इसके पालन करने में असमर्थ हैं। रामायणकालीन वर्णव्यवस्था का उद्देश्य समाज के विकास के लिए एक ऐसे वातावरण की सृष्टि करना था, जिसमें सभी वर्ण सामाजिक संगठन में रहकर, अपने विहित कर्मो का यथायोग्य निर्वाह कर सकें और उपलब्ध साधनों द्वारा अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकें तथा जीवन में सफलता उपलब्ध कर सकें। दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ में एक परिवार की तरह सभी वर्ण यहभोग करते हैं और सामाजिक सौहार्द का परिचय देते हैं। भरत जब राम को अयोध्या नगरी लौटने के लिए दण्डकारण्य में जाते हैं, तो अयोध्या में रहने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्णो के व्यक्ति उनके साथ जाने को उद्यत होते हैं। दण्डकारण्य में ही राम राजकुमार भरत से राज्य शासन के विषय में पूछते हुए, चारों वर्णो के लोगों की कुशल क्षेत्र जानना चाहते हैं-

ब्राह्मणैः क्षत्रियैवैश्यैः स्वकर्मनिरतैः सदा।
जितेन्द्रियैः महोत्सा हैः वृतामार्यैः सहस्रशः।।

(अयोध्याकाण्ड, सर्ग 100 श्लोक 41)

इन उच्चारणों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वाल्मीकि-रामायण में सामाजिक जीवन की मूलआधार शिक्षा वैदिक वर्ण व्यवस्था ही थी। समाज में यही धारणा थी कि ईश्वर ने सभी को समान रूप से उत्पन्न किया है- **सर्वे अमृतस्यपुत्राः।** अपने कर्मों एवं गुणों के अनुसार ही लोग विभिन्न जातियों में विभक्त हैं। वस्तुतः रामायण में सिद्धान्त रूप से जातिपाति काभेदभाव नहीं था-परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से जाति के बन्धन कठोर थे। तदुपरान्त भी समाज में प्रत्येक वर्ण के व्यक्ति का उचित सम्मान होता था-कहीं भी छूत-छात का भेदभाव नहीं था।

इस वेदानुकूल वर्णव्यवस्था में ब्राह्मणों का स्थान सर्वप्रथम था। ब्राह्मण माता-पिता से उत्पन्न अथवा विद्वान ब्राह्मणों के विहित कर्म करने वाला व्यक्ति ब्राह्मण कहा जाता था। विश्वामित्र ने जन्मना क्षत्रिय होते हुए भी-ब्राह्मण विहित कर्म करने के कारण, घोर तपस्या द्वारा ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लिया था-स्वयं ब्रह्म का विश्वामित्र को यह कथन है-

ब्रह्मर्षित्वं न सन्देहः सर्वं सम्पद्यते तव।
इत्युक्त्वा देवताश्चापि सर्वाऽजग्मु यर्थागतम्।।
विश्वामित्रोऽपिधर्मात्मा लब्ध्वा ब्राह्मणयमुत्तमम्।।
पूजयामास ब्रह्मषि वसिष्ठं जयतां वरम्।।

(बालकाण्ड सर्व 65, श्लोक 26,27)

ब्राह्मणों की आज्ञा के विरूद्ध राजा भी कर्म नहीं कर सकता था। राजा दशरथ ने अपने पुत्रेष्टि यज्ञ में समुन्त्र के द्वारा सुयज्ञ, वामदेव, जाबलि, कश्यप, वसिष्ठ आदि ब्राह्मणों को बुलाया तथा उनके उपस्थित होने पर, सभी ब्राह्मणों का देवता के समान पूजन किया तथा उनकी आज्ञा के अनुसार ही यज्ञ सम्पन्न किया।

सीता के शपथ समारोह में भी श्रीरामचन्द्र जी ने चातुर्वेध सहित ब्राह्मणों को आमन्त्रित करके उनको विशेष सम्मान दिया। जन्मना क्षत्रिय विश्वामित्र भी वसिष्ठ (ब्राह्मण) से पराजित हो जाने के पश्चात् ब्राह्मण को क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र से अधिक बलशाली मानते हुए कहते हैं-

घिग् बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलम् बलम्।
एकेने ब्रह्मदण्डेन सर्वास्त्राणि हतानि मे।।

(शेष पृष्ठ 21 पर)

यज्ञोपवीत का महत्त्व

❐ स्व. स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वैदिक धर्म में संस्कारों का बहुत महत्व है। वैदिक धर्म के अनुसार मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिए सोलह संस्कारों का करना अत्यन्त आवश्यक है। सभी संस्कार महत्वपूर्ण हैं, परन्तु इन सबमें उपनयन संस्कार एक विशिष्ट स्थान रखता है। यही वह संस्कार है जिससे बालक की शिक्षा और दीक्षा का प्रारम्भ होता है एवं उसे द्विजत्व की प्राप्ति होती है। इसी समय से उसे वैदिक कर्मकाण्ड और यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त होता है, जैसा कि वेद में भी आदेश है–

यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतं नशीमहि॥ ऋ 10.57.2

अर्थात् सामान्यजनों की यह कामना है कि जो यज्ञ का उत्तम साधनरूप तन्तु=उपवीत का धागा विद्वानों में प्रचलित है, उस विधि –विहित सूत्र को हम प्राप्त करें।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यज्ञोपवीत धारण न करना अपने–आपको विद्या तथा यज्ञ के अधिकार से वंचित रखना है और यज्ञोपवीत के बिना बालक द्विज भी नहीं बन सकता, अतः उन्नति के इच्छुक नर–नारियों को यज्ञोपवीत संस्कार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वैदिक धर्म के अनुसार यज्ञोपवीत एक अत्यन्त वैज्ञानिक और महत्वपूर्ण संस्कार है। आचार्य अथवा गुरु यज्ञोपवीत देते समय अथवा यज्ञोपवीत बदलते समय व्यक्ति जिस मन्त्र का उच्चारण करता है उसी से यज्ञोपवीत की महिमा स्पष्ट है–

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

पारस्करगृह्यसूत्र 2.2.11

परमपवित्र, आयुवर्धक, अग्रणीयता का द्योतक, श्वेतवर्ण का यह यज्ञोपवीत, जिसे प्रजापति परमात्मा ने प्रत्येक बालक को सहजस्वभाव से–गर्भ से, जरायु (गर्भ की झिल्ली) के रूप में प्रदान किया है, उसको तू धारण कर, पहन। यह यज्ञोपवीत तुझे बल और तेजदायक हो। तू यज्ञोपवीत है, मैं तुझे यज्ञ की यज्ञोपवीतता के साथ पहनता हूँ।

इस मन्त्र में यज्ञोपवीत के बल और तेज प्रदान करनेवाला कहा गया है। यज्ञोपवीत के तीन तारों में बल और तेज दृष्टिगोचर नहीं होता, परन्तु जो इन तीन तारों के रहस्य को हृदयङ्गम कर लेता है, उसमें बल और तेज का संचार हो जाता है। इसके रहस्य को समझकर ही लाखों सिक्खों, राजपूतों और मराठों ने अपने सिरों की आहुति दे दी, परन्तु यज्ञोपवीत का त्याग नहीं किया।

जिस प्रकार भारतीय शासन के तिरंगे झण्डे का कोई विज्ञान है, इसमें तीन रंग क्यों हैं? इसके मध्य में स्थित चक्र का क्या अभिप्राय हैं? इसी प्रकार यज्ञोपवीत का भी रहस्य है। यज्ञोपवीत में नौ तन्तु, तीन दण्ड और पाँच गाठें होती हैं। इसके नौ तन्तुओं में नौ देवताओं की कल्पना की गई है यथा–

ओंकारः प्रथमे तन्तौ द्वितीयेऽग्निस्तथैव च।
तृतीये नागदैवत्यं चतुर्थे सोमदेवता॥
पंचमे पितृदैवत्यं षष्ठे चैव प्रजापतिः।
सप्तमे मरूतश्चैव अष्टमे सूर्य एव च॥
सर्वे देवास्तु नवमे इत्येतास्तन्तुदेवताः॥

सामवेदीय छान्दोग्यसूत्र–परिशिष्ट पहले तन्तु में ओंकार, दूसरे में अग्नि, तीसरे में अनन्त, चौथे में चन्द्रमा, पाँचवें में पितृगण, छठे में प्रजापति, सातवें में वायुदेव, आठवें में सूर्य और नवें तन्तु में सर्वदेवता प्रतिष्ठित हैं।

यज्ञोपवीत धारण करनेवाला बालक यज्ञोपवीत के तन्तुओं में स्थित नौ देवताओं के निम्न गुणों को अपने अन्दर धारण करता है–

ओंकार– एकतत्व का प्रकाश, ब्रह्मज्ञान। ❑ अग्नि–तेज, प्रकाश, पापदाह, ऊर्ध्व–गमन। ❑ अनन्त–अपार धैर्य और स्थिरता। ❑ चन्द्रमा–मधुरता, शीतलता, सर्वप्रियता। ❑ पितृगण–आशीर्वाद, दान और स्नेहशीलता। ❑ प्रजापति–प्रजापालन, स्नेह, सौहार्द। ❑ वायु–पवित्रता, बलशालिता, धारणशक्ति। ❑ सूर्य–गुणग्राहकता, प्रकाश, अन्धकारनाश, मल–शोषण। ❑ सर्वदेवता–दिव्य और सात्विक जीवन।

जो यज्ञोपवीत के इन गुणों को स्मरण कर, इनसे प्रेरणा प्राप्त करेगा, उसका जीवन उच्च, महान्, यशस्वी और तेजयुक्त क्यों न होगा?

नौ तन्तुओं का एक और भी रहस्य है। यह शरीर अथर्ववेद के अनुसार "अष्टाचक्रा नवद्वारा:" (10.2.31)। आठ चक्र और नौ द्वारों का नगर है, अतः नौ तन्तु हमें एक सन्देश देते हैं कि प्रत्येक द्वार पर एक–एक प्रहरी नियत करना है, जिससे हम कोई बुरा कर्म न कर सकें, इन नौ द्वारों में से कोई बुराई हमारे अन्दर प्रविष्ट न हो सके। ये नौ द्वार हैं–दो आंख, दोन कान, दो नासिका के छिद्र, एक मुख और दो मल–मूत्र त्यागने के छिद्र। हमें प्रत्येक द्वार पर एक–एक चौकीदार बैठाना चाहिए। हम आँखों से अच्छे दृश्य देखें, प्रभु की रचना के सौन्दर्य को निहारें, गन्दे–दृश्य और स्वास्थ्य को नष्ट करनेवाले सिनेमादि न देखें। हमारी दृष्टि ऐसी हो–

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति॥

दूसरों की स्त्रियों को माता के समान, दूसरों के धन को मिट्टी के ढेले के समान और सब प्राणियों को अपने आत्मा के समान देखें, क्योंकि ऐसा देखनेवाला ही वास्तव में देखता है।

कानों से हम प्रभु का गुणगान सुनें, प्रभु का कीर्तन सुनें, गाली–गलौच और गन्दे गाने न सुनें। यज्ञोपवीतधारी का जीवन वेदमय होना चाहिए और वेद के अनुसार–भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम। यजु. 25/21 कानों से हम उत्तम बातें सुनें।

इसी प्रकार नाक से उत्तम, दिव्य गन्ध ही सूँघें, विषय–वासनाओं की गन्ध ही न लेते रहें। जिह्वा से स्वास्थ्य–वर्धक उत्तम और सात्विक पदार्थों का सेवन करें। उपस्थ और गुदा का भी संयम रखें। सच्चे ब्रह्मचारी बनें। यह है यज्ञोपवीत के नौ तन्तुओं का विज्ञान। यज्ञोपवीत में तीन दण्ड अथवा धागे होते हैं। ये तीन दण्ड मन, वचन और कर्म की एकता सिखाते हैं। जो मन में है, वही वचन में होना चाहिए और उसी प्रकार के कर्म करने चाहिए। जब मन, वचन और कर्म में एकता होती है, तब मनुष्य महात्मा बन जाता है, अन्यथा वह दुरात्मा हो जाता है।

तीन दण्डों का एक और भी अभिप्राय है। वह यह कि कायदण्ड, वाग्दण्ड और मनोदण्ड, अर्थात् शरीर, वाणी और मन को संयम में रखना। कायसंयम के द्वारा ब्रह्मचर्य का पालन, गुरुओं का आदर और सत्कार, अहिंसा और तपादि। वाणीसंयम के द्वारा सत्य बोलना, हितकर बोलना, मित बोलना और मधुर बोलना तथा स्वाध्याय करना और मनसंयम के द्वारा मन के विकारों को दूर करके उसे शुद्ध, पवित्र और शिवसंकल्पोंवाला बनाना तथा ईश्वर–चिन्तन करना। यज्ञोपवीतधारी के

लिए शरीर, वाणी और मन का यह संयम अत्यावश्यक है।

तीन तारों में एक तीसरा रहस्य भी छुपा हुआ है। यह संसार त्रिगुणात्मक है, सत्त्व, रज, और तम की तीन लड़ियों में समस्त प्राणी बँधे हुए हैं। यज्ञोपवीत के तीन धागे यह स्मरण कराते हैं कि हमें इस संसार से निकलना है। संन्यासी संसार के मोह, माया और ममता से निकल जाता है, इसीलिए संन्यासाश्रम में यज्ञोपवीत उतार दिया जाता है।

यज्ञोपवीत के तीन तारों में विश्वविज्ञान भरा हुआ है। ये तीन तार एक और संकेत भी दे रहे हैं, वह यह संसार में तीन प्रकार के ऐश्वर्य हैं- सत्य, यश और श्री। यज्ञोपवीतधारी को इन तीनों में से कोई एक चुनना होता है। ब्राह्मण के लिए सत्य मुख्य है अन्य दो बातें गौण हैं। ब्राह्मण बनना है तो चोटी का सत्यवादी ब्राह्मण बनना, ऐसा-वैसा नहीं। क्षत्रिय बनना है तो यशस्वी और यशस्वी भी चोटी का, युद्ध में पीठ न दिखानेवाला, परन्तु साथ ही जीवन में सत्य भी हो। वैश्य बनना है तो साधारण पैसे वाला नहीं, अपितु चोटी का बनना। कुबेर और भामाशाह भारत के ही थे। धन कमाना, परन्तु सचाई के तीन और यशवालों की रक्षा भी करना।

तीन तार एक और रहस्य के भी सूचक हैं। प्रत्येक मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं-पितृऋण, ऋषिऋण तथा देवऋण, प्रत्येक यज्ञोपवीतधारी को इन ऋणों से अनृण होने का प्रयत्न करना चाहिए।

माता-पिता जन्म देकर तथा लालन-पालन करके हमें बड़ा करते हैं। उनकी सेवा-शुश्रूषा करके यह ऋण कुछ सीमा तक चुकाया जा सकता है, इसीलिए उपनिषद् के ऋषि ने 'मातृदेवो भव' और 'पितृदेवो भव' का उपदेश दिया है। ब्रह्मा से लेकर महर्षि दयानन्दपर्यन्त सच्चे त्यागी, तपस्वी और वीतराग विद्वान जिन्होंने वैदिक संस्कृति और सभ्यता को हम तक पहुंचाया है तथा समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन करते रहे हैं, हमारा कर्तव्य है कि हम उनके द्वारा दी हुई विद्या को पढ़कर, उपदेशों और लेखों द्वारा दूसरों तक पहुंचाएं। यह ऋषिऋण से अनृण होने की विधि है।

वायु, अग्नि, जल आदि देव हैं, यज्ञ द्वारा इनको शुद्ध करना देवऋण से अनृण होना है। इसका एक और अभिप्राय भी है, इन्द्रियों को भी देव कहते हैं, अतः समस्त इन्द्रियों का सदुपयोग जानकर उन्हें दृढ़ बनाना और उनका ठीक प्रयोग करना भी देवऋण चुकाना है। देव का अर्थ है परमात्मा। प्रतिदिन परमात्मा की उपासना करना।

यज्ञोपवीत में पाँच गाँठे होती हैं। पाँच गाँठे पंचमहायज्ञों को करने की ओर संकेत कर रही हैं। पितृऋण, ऋषिऋण और देवऋण चुकाने के लिए इन यज्ञों का करना अनिवार्य है। पाँच ग्रन्थियों का एक और भी अभिप्राय है। प्रत्येक मनुष्य में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकाररूपी पाँच गाँठें हैं। यज्ञोपवीत की ये ग्रन्थियाँ यज्ञोपवीतधारी को यह स्मरण कराती हैं कि इन गाँठों को खोलना है। यज्ञोपवीत वाम स्कन्ध से धारित किया जाकर हृदय और वक्षस्थल पर होता हुआ कटि-प्रदेश तक पहुँचता है। इसमें भी एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक रहस्य छुपा हुआ है। प्रत्येक मनुष्य पर तीन प्रकार के बोझ हैं। बोझ का भार कन्धे पर पड़ता है, इसलिए यज्ञोपवीत कन्धे पर होता है। संसार में बोझ को वही वहन कर सकेगा जो कटिबद्ध है, जिसकी कमर कसी हुई है, इसीलिए यज्ञोपवीत कटि-प्रदेश तक लटकता है। संसार में सफलता वही प्राप्त करेगा, जो लक्ष्य को अपने सम्मुख रखेगा और लक्ष्य उसी व्यक्ति के समक्ष रह सकता है जो किसी कार्य को हृदय से करे, इसलिए यज्ञोपवीत हृदय पर होता है।

यज्ञोपवीत का कन्धा, हृदय और कटि-प्रदेश पर ही ठहराने का एक और भी रहस्य है और वह यह कि कन्धे के ऊपर ज्ञानेन्द्रियाँ आरम्भ हो जाती हैं, जिह्वा इसका अपवाद है। मनुष्य देव बन जाता है, वह संन्यास ले लेता है, और यज्ञोपवीत उतार दिया जाता है।

तीन ऋण एवं यज्ञों को हृदय से स्वीकार किया जाता है। हृदय वाम भाग में होता है, इसीलिए यज्ञोपवीत वाम स्कन्ध से हृदय पर होता हुआ दाहिनी ओर धारण किया जाता है। प्रत्येक यज्ञोपवीतधारी अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए, सभ्यता और संस्कृति के प्रचार और प्रसार के लिए तथा मातृभाषा की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहे, इसीलिए यह यज्ञोपवीत कटि-प्रदेश तक लटकता है।

यज्ञोपवीत के सम्बन्ध में दो बातें और स्मरणीय हैं। एक यह कि प्रत्येक व्यक्ति को एक समय में एक ही यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए, दो नहीं। दूसरी यह कि यज्ञोपवीत श्वेत होना चाहिए क्योंकि मन्त्र में से ''शुभ्रम्'' कहा गया है- मेखला- उपनयन-संस्कार में मौंजी भी धारण करनी पड़ती है। वेद में मेखला के गुण इस प्रकार वर्णन किये हैं-

श्रद्धाया दुहिता तपसोऽधिजाता स्वसा ऋषीणां भूतकृतां बभूव।
सा नो मेखले मतिमा धेहि मेधामथो नो धेहि तप इन्द्रियं च॥

अथर्व. 6.133.4

यह मेखला श्रद्धा की पुत्री, तप से उत्पन्न होनेवाली, यथार्थकारी ऋषियों की बहिन है। यह मेखला हमें बुद्धि, मेधा, कष्टों को सहन करने का सामर्थ्य और इन्द्रियों की विशुद्धता प्रदान कराती है।

मेखला धारण जहाँ वीर्य-रक्षण में सहायक है तथा अण्डकोषवृद्धि आदि रोगों को रोकती है, वहां शतपथब्राह्मण के शब्दों में यह आत्मतेज भी प्रदान करती है, इसीलिए उपनयन के समय इसके धारण करने का विधान है। **अन्य मतों में यज्ञोपवीतः** सिक्खों के प्रथम गुरु श्री नानकदेवजी की एक वाणी इस विषय में बहुत ही महत्वपूर्ण है-

दया कपाह सन्तोष सूत, जत गंठी सत वट्ट।
एह जनेऊ जीऊ का हयिता पाण्डे धत्त॥
ना यह तुट्टे ना मल लागे न यह जले न जाय।
धन्न सो मानुसा नानका जो गल चल्लै पाय॥

श्री नानकदेव जी यज्ञोपवीत को अतिश्रेष्ठ समझते थे, अतः उन्होंने मानसिक यज्ञोपवीत धारण करने पर विशेष बल दिया है, क्योंकि वह न कभी टूट सकता है और न कभी मैला हो सकता है।

जैनमत के आदिपुराण में लिखा है कि ''इस सवर्णी काल के प्रथम चक्रवर्ती भरत महाराज ने दिग्विजय यात्रा करके अनेक सेनासहित दिग्विजय की प्रथा चलाई। एक दिन राजद्वार में घास आदि बोकर उन्होंने सभी प्रजा को बुलाया। जो लोग घास पर से दरबार में आये उन्हें पूर्ण अहिंसक न समझा गया और जीव-हिंसा के भय से जो लोग घास पर से न आकर अन्य मार्ग से आये वे श्रेष्ठ ब्राह्मण पदवाच्य हुए और उन्हें उपवीत दिया गया।'' इस प्रकार जैनग्रन्थों में भी यज्ञोपवीत का स्पष्ट उल्लेख है। महात्मा गौतम बुद्ध ने ''उपनयन को धर्ममार्ग पर ले-जानेवाला और उपवीत को शान्तपद की प्राप्ति'' कहकर उल्लेख किया है।

पारसियों के यज्ञापेवीत धारण करने का मन्त्र इस प्रकार है-

फ्राते मज्दाओ वरत् पौरवनीम् एयाओं धनिमस्तेहर पाये संघेम। मैन्युतस्तेम् बंधुहिम् दयेनीम् मज्दवाम्राम्।

ऐ डोरा! तू तारों के समान तेजस्वी तथा श्रेष्ठ दैवीशक्तिवाला है तथा आयु का देनेवाला है। पवित्र पारसी धर्म के चिन्ह यज्ञोपवीत! तुझे सबसे पहले मज्दा ने धारण किया था। मैं तुझे पहनता हूँ।

(शेष पृष्ठ 22)

ભેખધારી

લેખન સામગ્રી:- શ્રી રણજિતસિંહ પરમાર, મન્ત્રી આર્યસમાજ હાથીખાના, રાજકોટ

શ્રી જયદેવજી આર્ય. નામ પ્રમાણે ગુણ. આખાય નામમાં એક પણ શબ્દ એવો નથી કે જેનો શ્રી જયદેવજીના જીવન, વ્યક્તિત્વ અને કર્મ સાથે મેળ ન ખાતો હોય.

ઋષિભક્ત પિતાને ત્યાં જન્મ લીધો. જાતકર્મ સંસ્કારની ગળથુથીમાંથી જ આર્યત્ત્વના સંસ્કાર આત્મસાત કર્યા. વ્યવસાયમાં કેટ-કેટલીયે ચડતી પડતી જોઈ. મુમ્બઈના ખેતવાડી ક્ષેત્રમાં પ્રારમ્ભેલો વ્યવસાય એક સમયે સંકોચાવાની સ્થિતિ પર આવ્યો હતો. પરંતુ પોતાના નામના ગુણ પ્રમાણે જય પ્રાપ્ત કરવાના લક્ષ્ય સાથે પુરુષાર્થ કરતા રહ્યા, અને જયને વર્યા પણ ખરા. મુમ્બઈથી આરમ્ભેલો વ્યવસાય સુરત સુધી વિસ્તર્યો. પણ આ ચડતી-પડતીના કાળમાં પણ પિતા તરફથી ઋષિના મિશન પ્રત્યેની મળેલી જવાબદારીને ભૂલ્યા નહોતા. પ્રણ લીધું હતું કે મુમ્બઈ અને અન્ય ક્ષેત્રોમાં સ્વબળે – સ્વ-વ્યયથી એક હજાર સ્થળે યજ્ઞ મારફતે ઋષિના વિચારોનો પ્રચાર કરવાનું. દરરોજ સવારે એક થેલામાં હવનકુંડ, સમિધા-સામગ્રી, ઘી, હવનના પાત્રો, પાથરણા વિગેરે લઈને નિકળી પડતા. કોઈપણ ચાલી, સોસાયટી કે ફળિયાના ચોકમાં જાતે જ સફાઈ કરી, યજ્ઞની વ્યવસ્થા કરીને ઘેર ઘેર જઈને હાથ જોડીને યજ્ઞમાં પધારવાની વિનંતી કરતા. યજ્ઞ પછી લોકભોગ્ય ભાષામાં ઋષિના સિદ્ધાન્તોને અનુરૂપ પ્રવચન આપતા. સરલ શૈલીમાં જાતે જ રચેલી કવિતાઓ ગાતા. આવી રીતે મુમ્બઈ, સુરત અને ગુજરાતના વિવિધ શહેરોમાં એક હજાર કરતા પણ વધારે સ્થળે પ્રચાર કર્યો છે. ભણતર ઓછું હોવા છતાં ગણ્યા વધારે હતા. વિદ્વાનો પાસે મન્ત્રોને સન્ધિ વિચ્છેદ કરાવીને બોલાવડાવતા અને પોતાના શબ્દોમાં પોતાને પાઠ કરવામાં અનુકૂળ પડે તેવી રીતે લખીને મન્ત્ર પાઠ કરતા.

પોતાના વ્યવસાયને પણ એક ટ્રસ્ટના રૂપમાં જ જોતા અને પોતાને ટ્રસ્ટી માત્ર સમજીને સંચાલન કરતા હતા.

ટંકારામાં ઋષિ-બોધોત્સવમાં ઋષિલંગરની વ્યવસ્થા ગુજ. પ્રા. આ. પ્ર. સભા કરતી. અનિવાર્ય સંજોગોમાં સભાએ ઋષિલંગરની જવાબદારી છોડી. ટ્રસ્ટની સ્થિતિ સમયે અનુકૂળ નહોતી. શ્રી જયદેવજી આગળ આવ્યા અને ઘણા સમય સુધી ઋષિ લંગરની સમ્પૂર્ણ જવાબદારી પોતાના ખભે ઉપાડી. જ્યારે ટંકારા ટ્રસ્ટે પોતે ઋષિલંગરનો ભાર ઉપાડ્યો ત્યારે પણ વ્યવસ્થાની જવાબદારી તો તેમણે જ લીધી હતી. જીવનના છેલ્લા વર્ષો સુધી આ જવાબદારીનું પાલન કર્યું હતું.

જ્યાં પણ પ્રચાર માટે જતા, પોતાની સાથે સ્ટવ, કૂકર, ખિચડીનું સીધું, મસાલા વિગેરે લઈને જતા. જાતે જ રસોઈ કરતા, કોઈના ઉપર ભારરૂપ નહોતા બનતા.

કહે છે કે પુરુષની સફળતા પાછળ સ્ત્રીનો હાથ હોય છે. એમના ધર્મપત્નીનો ડગલેને પગલે સાથ મળ્યો છે. તેમની સેવાને પણ આર્યજગત ભૂલી શકે તેમ નથી.

આર્યજગત અને ટંકારા પ્રત્યેની તેમની લાગણીઓને જોઈને ટંકારા ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટિઓએ સર્વાનુમતિથી ટ્રસ્ટી તરીકે તેમની વરણી કરી હતી.

એટલે જ કહેવું પડે છે કે જીવનના પ્રત્યેક ક્ષેત્રમાં જયને વરીને દેવત્ત્વને પ્રાપ્ત કરી આર્યત્તત્ત્વને આત્મસાત કર્યું હતું શ્રી જયદેવભાઈ આર્યે.

આર્યસમાજ રાજકોટ અને શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ ટંકારા સદાય તેમનું ઋણી રહેશે. તેમને શ્રદ્ધાંજલી

ગુજરાતમાં આર્યસમાજ ક્ષેત્રે એક યુગની સમાપ્તિ.

હજૂ શ્રી જયદેવ આર્યની ક્ષતિપૂર્તિ થઈ નથી ત્યાં બીજા એક યુગનું સમાપન થઈ ગયું. મુમ્બઈમાં ઘાટકોપરમાં આર્યસમાજની સ્થાપનાથી લઈને એના મકાન માટે અનેક વિઘ્નોમાંથી પસાર થયા. આર્યસમાજ ઘાટકોપરના પ્રધાનપદે હતા ત્યારે સાર્વદેશિક આ. પ્ર. સભા દ્વારા સ્વીકૃત નિયમાનુસાર આર્યસમાજનો વહીવટ થાય તેનું પુરેપુરુ ધ્યાન રાખતા. દર વર્ષે સદસ્ય ઇન્કમટેક્ષમાં ભરેલ રિટર્ન પ્રમાણે પોતાની આવક સમાજના નોટિસ બોર્ડ પર જાહેર કરતા. અને સભાના નિયમાનુસાર પોતાની આવકના રેશિયોમાં સમાજનું સદસ્ય લવાજમ ભરતા. આવી વ્યવસ્થા ભાગ્યેજ કયાંય જોઈ છે. આ યુગના સૂત્રધાર હતા શ્રી ધનજીભાઈ વેલાણી. કચ્છમાંથી ગાડીભાડું પણ માંગી લાવીને મુમ્બઈ પહોંચ્યા હતા સ્વપ્નાઓ લઈને. કડીયા કામની મજૂરી કરતા કરતા પ્રતિષ્ઠિત કોન્ટ્રેકટર બન્યા. ઋષિ દયાનન્દે બતાવેલ માર્ગ પર જાતે જ ન ચાલ્યા પણ બીજાઓને પણ તે માર્ગે ચાલવાની પ્રેરણા આપી. તેમનીથી પ્રેરાઈને કેટ-કેટલાય પરિવાર આજે વૈદિક માર્ગે ચાલી રહ્યા છે. મૂળ તો ધરતીપુત્ર હતા. એટલે ખેતી પ્રત્યેનું આકર્ષણ તેમને અમદાવાદ-ગાંધીનગર પાસે દહેગામ ખેચી ગયું. ધંધો દિકરાઓને સોંપીને નજીકના મગોડી લાટ કમ્પામાં ખેતી કરવા લાગ્યા. રહેવા માટે આર્ય નિવાસ બનાવ્યું. વેદ પારાયણ કરીને ગૃહપ્રવેશ કર્યો. ઘરમાં અલગથી યજ્ઞશાળા બનાવી. દૈનિક પંચમહાયજ્ઞનું અનુષ્ઠાન નિત્યધર્મ બની ગયો. ત્રીજા નંબરના પુત્ર શ્રી હિમ્મતભાઈ કે જે થોડો સમય માટે ચિત્તોડ ગુરુકુલમાં ભણવા માટે ગયા હતા, ખેતીના કામ માટે તેમની સાથે રહેવા લાગ્યા. ખેતીની સાથે ગૌશાળા બનાવી. એમની ગૌભક્તિને જોઈને આસપાસના ધરતીપુત્રો પણ ગૌપાલન કરવા લાગ્યા. એમના ધર્મપત્ની હિરાબા ડગલેને પગલે પત્નીવ્રત ધર્મનું પાલન કરતા હતા એટલે વૈદિકધર્માનુષ્ઠાનમાં વધારેને વધારે ઊંડા ઉતરતા ગયા. આર્યત્ત્વને ઘર ઘર સુધી પહોંચાડવા માટે દીર્ઘદષ્ટિથી યોજના બનાવી. આર્ય વનવિકાસ ફાર્મ ટ્રસ્ટની સ્થાપના કરી. સરકારી ખરાબાની જમીનો લઈને વન વિકાસની સાથે પ્રચાર થાય તેવું આયોજન કર્યું. ફંડ ભેગું કરવા અનોખી યોજના બનાવી. પરિણામે આજે આર્ય વન વિકાસ ફાર્મ અનેક વિધ યોજનાઓનું કેન્દ્ર, આખાય ભારતમાં પ્રસિદ્ધિ ધરાવે છે. આર્ય વાનપ્રસ્થાશ્રમ, દર્શન યોગ મહા વિદ્યાલય એના પ્રમુખ કેન્દ્ર છે.

જ્યારે ગુજરાતીમાં વેદભાષ્ય પ્રકાશનની યોજના બની ત્યારે એના મુખ્ય યજમાન બની ગયા. ગુજરાતીમાં વેદભાષ્યનું પ્રકાશન એમની અખંડ કીર્તિ બની રહેશે. એમના સ્વપ્નો – અધુરા કાર્યો પાર પાડવા એમના પુત્રો શ્રી પ્રભુભાઈ, શ્રી

મનસુખભાઈ, શ્રી હિમ્મતભાઈ અને શ્રી વિનોદભાઈ પોતાના પરિવાર સાથે પુરુષાર્થ કરી રહ્યા છે.

દેશ-વિદેશથી ટંકારા આવતા ઋષિભક્તો માટે ટંકારામાં એક ફ્લેટ પણ બનાવડાવ્યો છે. સમય સમયે ટંકારામાં તેમના પરિવાર તરફથી સહયોગ મળતો રહે છે.

શ્રીમતિ હિરાબા અને શ્રી ધનજીભાઈ વેલાણીના સ્વપ્નોને સાકાર કરવા પુરુષાર્થ કરવો એજ એમને સાચી શ્રદ્ધાંજલી છે.

ટંકારા ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટિઓ, આચાર્ય અને અધ્યાપકો તેમજ બ્રહ્મચારિઓ તેમને શ્રદ્ધાંજલી આપે છે.

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा में आगामी बोधोत्सव 2014

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन बुधवार, वीरवार, शुक्रवार 26,27, 28 फरवरी 2014 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप उक्त तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

- रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मन्त्री

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

धार्मिक, सामाजिक असमानता और वैदिक धर्म

❒ मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य के जन्म का प्रयोजन क्या है? इसका उत्तर ढूंढने पर हमें वेदों व वैदिक साहित्य जिसमें उपनिषद्, दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति, रामायण व महाभारत आदि भी सम्मिलित हैं, तर्कसंगत व सन्तोषजनक उत्तर मिलता है। वेद बताते हैं कि हमारा आत्मा अनादि, अनुत्पन्न, अनन्त, अविनाशी, चेतन, एकदेशी, कर्मों का कर्ता, भोक्ता, ज्ञान व कर्म इसका स्वभाव है, राग, द्वेष, मोह, इच्छा, काम, क्रोध, अग्नि से यह जलता नहीं, वायु इसे सुखा नहीं सकती, जल इसे गीला नहीं कर सकता, शस्त्र इसे काट नहीं सकते आदि नाना प्रकार के गुण इससे जुड़े हैं या यह सब गुण इसमें हैं। स्वाभाविक है कि जब आत्मा अनादि, अजन्मा व अविनाशी है तो इसका अस्तित्व सदा बना रहता है। इसे अपने अस्तित्व को सार्थक करने के लिए मनुष्य का जन्म चाहिये। यह स्वयं तो जन्म ले नहीं सकता क्योंकि जन्म लेने में जो कुछ करना होता है वह यह न जानता है और न कर सकता है। फिर प्रश्न होता है कि मनुष्य जन्म कैसे प्राप्त हो, तो आवश्यकता है कि हमसे बड़ी एक सत्ता होनी चाहिये जो अस्तित्व, ज्ञान, शक्ति व सामर्थ्य आदि में हमसे बहुत बड़ी ही न हो अपितु चेतनस्वरूप, आनन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी आदि गुणों से युक्त भी हो। हम अपने विशाल ब्रह्माण्ड को देखते हैं तथा इस सृष्टि में प्राणी जगत को देखते हैं तो यह ज्ञात होता है कि उस सत्ता अस्तित्व अवश्यमेव है। जिसको ईश्वरी सत्ता की अनुभूति न हो, उसे स्वाध्याय, विचार, चिन्तन, ध्यान, विद्वानों व योगियों की संगति कर खोज करनी चाहिये। उसी सत्ता ने इस संसार का निर्माण किया है, उसी ने सभी प्राणियों को उत्पन्न किया है और वही संसार का पालन कर रही है अर्थात् चला रही है। अतः हमें अर्थात् हमारी आत्मा को जन्म देने का कार्य उस ईश्वर या परमात्मा द्वारा सम्पादित किया जाता है। इसने इस संसार की रचना की और उसके बाद मनुष्यों को उत्पन्न किया। उन्हें भाषा एवं वेदों का ज्ञान दिया। यह ज्ञान समता मूलक है। इसके जानने वालों ने महाभारत काल के बाद इसका दुरूपयोग कर अपना स्वार्थ सिद्ध किया जिस कारण मनुष्यों के अनेक वर्ग व जातियां बन गई और इस वर्ग के लोगों ने वेद व शास्त्रों के नाम पर उन पर नानाविध अत्याचार किये। आइये, देखते हैं कि क्या वेदों में मनुष्यों में असमानता की शिक्षा है या समानता व बराबरी की।

वेदों व वेद मूलक मनुस्मृति आदि शास्त्रों की शिक्षा है कि जन्म से सब शूद्र=अज्ञानी=गुणहीन होते हैं और ज्ञान के संस्कारों से वह द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य बनते हैं। इसका अर्थ है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य आदि के घरों में भी जो सन्तानें जन्म लेती हैं वह संस्कार-शिक्षा-विद्याविहीन होने के कारण जन्म से शूद्र होती हैं। वर्णसूचक इन शब्दों के अर्थों पर विचार कर लेना भी उचित होगा। ब्राह्मण बड़े व वेद-शास्त्र आदि के ज्ञानी लोगों को कहते हैं। ज्ञान के साथ-साथ उसके अनुरूप आचरण भी आवश्यक है। आचारहीन को वेद भी पवित्र नहीं कर सकता, यह वेद वचन है। मनुस्मृति का एक प्रसिद्ध वचन है कि जो द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य वेद विधि से ईश्वरोपासना सहित पंच महायज्ञों को नित्यप्रति नहीं करता है वह शूद्र हो जाता है और उसके इन वर्ण वा वर्गों के सभी अधिकार छीन कर उसे शूद्र=सेवाकरने वाले कुल-समुदाय में सम्मिलित कर लेना चाहिये। मनुस्मृति में ऐसे भी वचन हैं जिसमें कहा गया है कि वेदाध्ययन व श्रेष्ठ कर्मों को करने से शूद्र द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य हो जाता है। यह उचित व स्वाभाविक है। शूद्र शब्द प्राचीन वैदिक साहित्य में उन लोगों के लिए प्रयोग में लाया गया जो ज्ञान की दृष्टि से शून्य थे या इतने अल्प शिक्षित कि वह बुद्धि व ज्ञान से करने वाले कार्यों को भली प्रकार से नहीं कर सकते थे। उनसे सेवा के कार्य लिए जाते थे। शिक्षा एवं वेदों के पढ़ने का अधिकार प्रत्येक मनुष्य को था वह चाहे किसी भी कुल में जन्मा हो या उसकी पृष्ठि भूमि कुछ भी क्यों न हो। इसमें वेद के मन्त्र का ही प्रमाण है जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने पुरूषार्थ व विद्याबल से यजुर्वेद से ढूंढ निकाला जो सभी स्त्रियों, शूद्रों व अन्त्यजों आदि को वेदाध्ययन का अधिकार प्रदान करता है। यह मन्त्र है, **'यथेमां वाचं कल्याणमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याम् शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं में कामः समृध्यामुप मादो नमतु ॥** (यजुर्वेद 26/2)।' इस मन्त्र में संसार को बनाने वाले ईश्वर ने सभी मनुष्यों को शिक्षा देते हुए कहा है कि उसने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, भृत्य, स्त्रियादि और अतिशूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है। वह इसी मन्त्र में आगे कहते हैं सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर विज्ञान को बढ़ायें। वह अच्छी बातों का ग्रहण करें तथा बुरी बातों को त्याग देवें जिससे कि वह दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों।

शूद्र के अभिप्राय को जान लेने के बाद ब्राह्मण आदि वर्णो के अभिप्राय को जानना भी आवश्यक है क्योंकि इन वर्णो के लिए प्रयुक्त शब्दों को लेकर समाज में बड़ी भारी भ्रांति है। ब्राह्मण बड़े या ज्ञानी को कहते हैं जो वेदों का ज्ञानी, वेदानुसार जीवन व्यतीत करने वाला, दूसरों को अध्ययन-अध्यापन द्वारा सत्य-शिक्षा देने वाला अर्थात् एक आदर्श अध्यापक, यज्ञ करने व कराने वाला, दान लेने व देने वाला व्यक्ति होता था। क्षत्रिय भी वैदिक काल में कोई जाति नहीं थी। यह उन लोगों के लिए अभिप्रेत थी जो शारीरिक बल व वीरता के कार्य करते थे। सेना में वीरता के कार्य करने वाले सभी लोग क्षत्रिय कहलाते थे चाहें उनके माता-पिता किसी भी वर्ण के क्यों न हों। क्षत्रिय का मुख्य कार्य एवं दायित्व समाज के सभी लोगों की अन्याय वा उत्पीड़न से रक्षा करना होता था और वह ऐसा करते भी थे। जो नहीं करता था उसका वर्ण उसके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार निर्धारित किया जाता था और उससे वही कार्य लिया जाता था। इसी प्रकार वैश्य वर्ण का कार्य भी कृषि, गो-पशुपालन व व्यापार आदि मुख्य रूप से करना होता था। न्यून, निर्धारित व उचित सूद लेकर दूसरे जरूरतमन्दों को धन भी देना उसके कार्यो में सम्मिलित था। वह एक प्रकार से इन कार्यो का ज्ञानी, अनुभवी व स्वभाव से इनमें रूचि रखने वाला होता था। इस प्रकार से वैदिक वर्ण व्यवस्था गुण, कर्मों व स्वभाव पर आधारित थी, जन्म व कुल पर आधारित नहीं थी। यह तो मध्यकाल में हमारे पण्डित वर्ग ने अपने अज्ञान, अविद्या के कारण स्थापित की है जिसमें उनके स्वार्थ भी रहे हैं। इससे समाज, देश, धर्म व संस्कृति को भारी हानि हुई है।

मध्यकाल में पूर्व कालीन गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था को त्याग कर जन्म पर आधारित जो जाति व्यवस्था

प्रचलित हुई उसमें जन्म व जाति के आधार पर भेदभाव किया जाने लगा। शूद्रत्व अर्थात् अज्ञानता-ज्ञानशून्यता-विद्याहीनता को जन्म, कुल व परिवार से जोड़ दिया गया और शूद्र शब्द से मनुष्यों की एक पृथक जाति निर्धारित की गई जो समय के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होती रही। हमें लगता है कि महाभारत के पश्चात अध्ययन-अध्यापन बाधित हुआ तो उस समय जो अशिक्षित-शूद्र बन्धु थे उनकी शिक्षा की व्यवस्था समाप्त हो गई। कारण यह था कि ब्राह्मण व अन्य द्विज वर्ण ही अपना अध्ययन सुचारू व सुव्यवस्थित रूप से नहीं कर रहे थे तो इतर बन्धुओं पर ध्यान कौन देता? धीरे-धीरे व समय के साथ अशिक्षित वर्ग की शूद्र संज्ञा हो गई और इनका अध्ययन बन्द हो गया। अध्ययन बन्द होने से स्वाभाविक था कि इनके द्वारा ईश्वर, व्यक्ति, परिवार, समाज व देश का चिन्तन भी बन्द हो गया। ज्ञान की बातों से यह दूर हो गये जिससे इनका मानसिक, बैद्धिक व शारीरिक अथवा स्वास्थ्य का पतन हुआ। पोषण की समस्या भी इनके सामने आयी होगी जिसकी समुचित व्यवस्था व उपाय न होने के कारण तथा अज्ञानी द्विजों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण यह शारीरिक दुर्बलता से भी ग्रसित हुए होंगे। इस स्थिति में पहुंच कर इनमें नाना प्रकार की जातियां बन गईं। द्विज कहे जाने वाले लोग इनके प्रति असमानता का व्यवहार करते थे तो इन्होंने देखा-देखी अपने समुदायों में भी असमानता का व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। इन अशिक्षित व अज्ञानी लोगों में भी परस्पर असमानता, अस्पृश्यता, ऊंच-नीच व छोटे-बड़े की भावना फैल गई और समय के साथ-2 स्थिति बद से बदतर होती गई। जैसा कि पूर्व वर्णित किया है कि महाभारत के कुछ वर्षों बाद स्त्रियों व शूद्रों को वेद व अन्य पुस्तकें पढ़ कर ज्ञान की प्राप्ति का अधिकार वेदों के ही नाम पर समाप्त कर दिया गया था। यहां तक की उन्हें छूने व उनके द्वारा द्विजों को छू लिये जाने को भी हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। वह न तो अन्य वर्णों के साथ उठ-बैठ सकते थे, न हि अन्य वर्णो का उन शूद्र वर्णों व जातियों के साथ सम्मानजनक व्यवहार होता था, विवाह आदि सम्बन्ध तो क्या ही होना था? उनके लिए अन्य तीन द्विज-वर्णो के घरों में सेवा व खेती आदि के काम ही करने के लिए बचे जिन्हें वह करते थे। उनकी बस्तियां भी अन्य तीन वर्णो की बस्तियों से दूर बना दी गई या बनने लगीं। जब यह भाई पढ़ेंगे नहीं तो सोच भी नहीं सकेंगे। जब सोचेंगे नहीं तो अन्य वर्णो व जातियों के कुछ पढ़े-लिखे लोगों द्वारा इनका मनचाहा शोषण व इनसे अपने कार्य कराना सरल हो गया क्योंकि विरोध तो होना ही नहीं था, ज्ञान व सामर्थ्य न होने के कारण। वर्षों तक यह श्रम-मजदूरी-खेती-अन्य वर्णों की सेवा का कार्य करते रहे जिससे इनका स्वाभिमान समाप्त हो गया और यह नारकीय जीवन व्यतीत करते रहे। यहां हम यह अनुभव करते हैं कि स्वयं द्विज कहलाने वालों का बुद्धि-ह्रास भी पराकाष्ठा पर था। यदि इनमें बुद्धि व ज्ञान होता तो यह अशिक्षितों को शिक्षा देकर अपने समकक्ष बनाते और इस विद्यादान के श्रेष्ठ कार्य से अपना ऐहिक व पारलौकिक जीवन सुधारते। उनका ऐसा न करना निश्चित रूप से ही घोर अज्ञानता व स्वार्थ को प्रकट करता है। जब उन्होंने अपने अज्ञानी पुत्रों को पढ़ाने की चिन्ता की व पुरूषार्थ किया तो इन परमात्मा के पुत्रों-पुत्रियों को भी शिक्षित करना व उनके प्रति सम्मानजनक व निष्पक्ष व्यवहार करना उनका धर्म वा कर्तव्य था। इससे सिद्ध है कि इस वातावरण में धर्म का पालन हो ही नहीं रहा था। यह दुःख की बात है कि इस व्यवस्था के अवशेष व प्रचलन यत्र-तत्र आज भी विद्यमान है, घोर, महाघोर दुःख की बात है। हम देखते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ व कुछ समय बाद नव जागरण का काल आरम्भ हुआ। अनेक महापुरूष उत्पन्न हुए परन्तु इनमें से कोई भी इनकी समस्याओं को समझ कर इसका समुचित उपाय व समाधान नहीं कर सका। कुछ ने सहानुभूति तो दिखाई और समानता की कुछ बातें भी कीं, परन्तु इससे समस्या हल होने वाली नहीं थी। समय का काल-चक्र चलता रहा और सन् 1863-1875 का काल आया। इस समय व इसके बाद के समय को हम दयानन्द-युग का नाम दे सकते हैं। स्वामी दयानन्द ने वैदिक वर्ण व्यवस्था, जन्म पर आधारित 'जाति-उपजाति-प्रजाति व्यवस्था' एवं ब्रह्मणेतर बन्धुओं की सामाजिक, आर्थिक व सभी समस्याओं पर समग्र रूप से विचार-चिन्तन किया। वेद आदि शास्त्रों का भी गहन अध्ययन व आलोडन किया जिनके नाम पर इन्हें स्थापित किया गया था। स्वामी दयानन्द जी को वेदों में मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव, ऊंच-नीच, छोटे-बड़े का एक भी मन्त्र, विचार या उल्लेख नहीं मिला। हां, मनुष्यों के कार्यो-कर्तव्यों में अन्तर होता था जिसका आधार उनकी शिक्षा-विद्या, रूचि, शारीरिक सामर्थ्य आदि का विचार था। वेद में उन्हें पूर्व उल्लिखित 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानी' मन्त्र मिला जो सभी स्त्री-पुरूष-वर्णों व जातियों को समान रूप से ईश्वर से उत्पन्न वेद के अध्ययन का अधिकार देता है। इसे प्रस्तुत कर उन्होंने स्त्री व शूद्रों आदि को वेदों के अध्ययन से वंचित करने वालों की जुबान बन्द कर दी। कोई इसका उत्तर नहीं दे सका। पुराण आदि ग्रन्थों को उन्होंने अनार्ष एवं अज्ञानी व स्वार्थी लोगों के बनाये ग्रन्थ सिद्ध किया और इसका अध्ययन व प्रचार विष मिले हुए अन्न या भोजन के समान बताया जिसे जीवित रहने के लिए त्यागना ही श्रेयस्कर है। युग ने करवट ली। आर्य समाज ने गुरूकुल, पाठशालायें, विद्यालय आदि खोले। कन्याओं के लिए पृथक विद्यालय व गुरूकुल खोले गये। यहां जन्म पर आधारित जाति या ऊंच-नीच को कोई स्थान नहीं था। यह महर्षि दयानन्द की पहल थी जिसने युग को बदल दिया। इससे कुछ लोगों के स्वार्थों को ठेस लग रही थी, उन्होंने छद्म रूप से इसका विरोध भी किया। बाद में व वर्तमान में राजनैतिक दलों के कारण भी आर्य समाज का यह मिशन पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सका।

काम यह करना था कि ऊंच-नीच, छोटे-बड़े व असमानता की भावना पूर्णतया समाप्त हो जाये। वेद, राम, कृष्ण, बाल्मीकी, रविदास आदि सन्तों को मानने वाले लोग आपस में ऐसे घुल- मिल जाते कि इनकी पहचान ही न हो पाती। अतीत में हमारे देश में शक व हूण आदि विदेशी लोग आये। वह हमारे समाज में ऐसे घुल-मिल गये कि आज उनके अस्तित्व के प्रमाण खोजने पर भी नहीं मिलते। ऐसा ही करना आर्य समाज का उद्देश्य या मिशन था। परन्तु हमारे पौराणिक समाज, राजनैतिक दलों व हमारे सामाजिक दृष्टि से दलित, पिडछे व कमजोर भाई-बहनों द्वारा आर्थिक हितों को महत्व देने के कारण जिन्हें राजनैतिक दलों ने गुमराह किया, आर्य समाज का यह मिशन सफलता की अंतिम परिणति नहीं देख सका। कोई जाने या न जाने, माने या न माने, वर्तमान में जो सुधार दृष्टिगोचर हो रहा है, वह अन्य किसी का किया हुआ नहीं है अपितु यह मुख्यतः महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की देन है। हां, कई राजनीतिक दल व संस्थायें इसका श्रेय लेने में आगे आये और उन्होंने इसका भरपूर लाभ लिया। हमारा मानना है कि आर्य समाज से इतर जिन लोगों ने इस कार्य को बढ़ाया व किया, उन्हें भी समस्या का पूरा ज्ञान नहीं था। वह समस्या का सही मूल्यांकन व उसके समाधान का उपाय न जान पाये, करते

(शेष पृष्ठ 22 पर)

महाभारत का सत्य व भ्रान्तियां

❒ श्रीमती अरूणा सतीजा (टंकारा श्री)

महाभारत एक महानत्तम ऐतिहासिक महाकाव्य है। इस ग्रंथ की मूल रचना वेद प्रचारक महर्षि वेदव्यास जी द्वारा की गई। महर्षि व्यास ने तीन वर्षो तक लगातार अथक परिश्रम करके ''जय'' नाम के मूल ग्रंथ जिस में मात्र 24000 श्लोक थे, की रचना कर विश्व को ज्ञान के प्रतीक इस ग्रंथ के उपहार स्वरूप भेंट किया। यह ग्रंथ ज्ञान का सर्वोत्तम खजाना है। जिस प्रकार समुद्र तथा हिमालय जड़-रतनों की खान हैं उसी प्रकार महाभारत ग्रथ भी नर-रत्नों तथा धर्म की खान हैं। भीष्म, भीम, धर्मराज युधिष्ठर, वीर अर्जुन तथा अर्जुन पुत्र अभिमन्यु, 16 कलाओं से पूर्ण श्री कृष्ण तथा कुन्ती व द्रौपदी जैसी यश्वस्वनी नारियां भी इस ग्रंथ की देन है।

जहां एक और यह ग्रंथ आत्मा की अमरता तथा चारों पुरुषार्थो का वर्णन करता है वहां राजनीति के सम्बन्ध में नारद नीति काशिक नीति तथा विदुर नीति का भी आदर्श प्रस्तुत करता है। अत: यह ग्रंथ श्रेष्ठक ऋषि की सर्वोत्तम रचना है।

उस समय बड़ा खेद व दु:ख होता है जब महान् शिक्षाविदों तथा विद्वानों को इस भ्रम में फसां देखते हैं कि ''इस ग्रंथ को पढ़ना तो दूर इसे घर में रखना भी गृह-कलह की जड़ है। परन्तु सच्चाई तो यह है कि यह ग्रंथ अभिशाप नहीं जीवन संजीवनी है, प्रकाश है, प्रेरणा है। उच्च सिद्धान्तों व आर्दशों का संग्रह है जिन्हें जीवन में धारण कर इस दिव्य मानव जीवन को सफल बना सकते है।

रामायण की तरह महाभारत में भी प्रक्षिप्पृों की भरमार है जिनके कारण महाभारत के अस्तित्व पर भी सन्देह होने लगता है। यह मध्यलकाल की विशेषता व देन है। मध्यकाल अज्ञानता, अन्धविश्वासों, जादू टोनो एवं चमत्कारों का युग माना जाता है। इस समय मूल ग्रंथो में बहुत मिलावट हुई। उस समय के लेखकों व विदेशियों को प्रत्येक घटना व व्यक्ति विशेष को किसी न किसी चमत्कार से जोड़ने में ही आनन्द आता था। जैसे द्रौपदी के पांच पति, भीष्म का नदी पुत्र होना आदि। परन्तु आज के वैज्ञानिको युग में ऐसी चमत्कारी घटनाओं पर विश्वास करना, हास्यप्रद एवं खेदजनक लगता है।

महाभारत के प्रक्षपृो में से एक प्रक्षपृ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर इन भ्रांन्तियों के सत्य को आप के सामने प्रस्तुत कर असत्य से पर्दा हटाने का प्रयास कर रही हूँ। श्रीमान सागर जी द्वारा टी.वी. पर प्रसारित होने वाला महाभारत सीरियल इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। 16 सितम्बर 2013 को पुन: 'महाभारत' टी.वी. पर दिखाया जा रहा है। सब पाठको एवं दर्शको से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि सचेत होकर इस सीरियल की घटनाओं पर गौर करें तथा सत्य को जानने का प्रयास भी।

आज तक सभी ऐसा मानते आ रहे हैं कि भीष्मपितामह का जन्म गंगा नदी में से हुआ था जैसा की टी.वी. पर भी दिखाया जा चुका है इसलिए उसे गंगा पुत्र माना जाता है।

जब कभी भी भीष्म पर कोई आपदा आयी तभी वह गंगा-नदी-माँ के पास गए गंगा नदी में से माँ के रूप में एक नारी उभर कर आयी और उसी के साथ भीष्म ने अपने दु:खो को साझा किया।

आओ जाने असत्य क्या है और असत्य क्या है। आदि सृष्टि से लेकर महाभारत तथा आज तक सभी सन्ताने अपने माता-पिता के सहयोग से मां के गर्भ में से पैदा होती रही है। मात्र भीष्म ही गंगा नदी के गर्भ पैदा हुए क्यों और कैसे?

जब उसके पिता महाराज शान्तुन थे तो फिर माता गंगा नदी क्यों। गंगा नदी ने मात्र एक पुत्र भीष्म को ही जन्म देने में समर्थ थी। अन्य किसी मानव सन्तान को जन्म नहीं दिया। जाति में से जाति की उत्पति होती है मनुष्य में से मनुष्य, पशु तथा पक्षी में से पशु-पक्षी। नदी तो जड़ है जड़ में सजीव की उत्पत्ति असम्भव है। सत्य तो यह है कि भीष्म की माता का नाम महारानी गंगा थी। उसी गंगा नाम से उसे गंगा नदी का पुत्र बना दिया। महारानी गंगा जन्हु राजा की पुत्री थी और राजा शान्तुन की पत्नी।

आदिपर्व अध्याय 97 के श्लोक संख्या 32 व 33 में- वन में गंगा को देखकर महाराज शान्तुन कहते है-सुन्दरी तू देवकन्या, दानव कन्या, गन्धर्व कन्या, यज्ञ कन्या, नागकन्या बता तू क्या है।

गंगा की सुन्दरता पर मुग्ध होकर राजा शान्तुन ने उस कन्या के सम्मुख शादी का प्रस्ताव रखा। उस कन्या ने भी प्रति उत्तर में अपनी एक शर्त राजा शान्तुन के सामने रखी 'जीवन प्रर्यन्त आप मुझे किसी भी काम करने के लिए मना नहीं करोगे। जिस क्षण मुझे मना करोगे उसी क्षण मैं तुम्हें छोड़ कर चली जाऊंगी। इस कन्या की जो भी सन्तान पैदा होती वह उसे मार कर नदी में डाल देती। (क्यों इसकी पुष्टि कहीं भी नहीं की गई) जब उसकी आठवीं सन्तान पुत्र पैदा हुआ तो राजा शान्तुन ने अति कुद्ध होकर कहा अब तुम इस पुत्र को नहीं मारोगी। ऐसा सुनते ही महारानी गंगा अपने नवजात पुत्र को साथ लेकर अपने गन्तव्य पर चली गई।

काफी समय बाद एक दिन राजा शान्तुन उसी वन में विहार के लिए गये और देखा कि नदी में पानी बहुत कम है। कारण जानने के लिए वह कुछ दुरी पर गये ही थे तो उन्होंने ने देखा कि एक वीर बालक ने अपने तीरो से गंगा नदी के जल को रोक रखा है। उसी समय महारानी गंगा भी वहां आ गई। अपने बेटो का हथ अपने पति के हाथ में पकड़वाते हुए कहा-यह तुम्हारा वही आठवां पुत्र है जिसे मैंने सब विद्याओं में निपुण व योग्य बना दिया है। इसका नाम 'देवव्रत' है। यह बालक बाद में भीष्मपितामह के नाम से व्यख्यात हुआ।

युवराज की आयु का नहीं होते हुए भी राजा शान्तुन उसे युवराज बना दिया। ऐसा महान व्यक्ति जड़ नदी का पुत्र हो सकता है वह तो विदूषी माता गंगा तथा सौम्य व शान्त भाव के पिता शान्तुन के सूरमा पुत्र थे। सत्य का निर्णय स्वयं करें।

- जे-10, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर (राजस्थान)

मनुष्यों परमात्मा मित्र के समान सब सुख देने वाला, संसार को उत्पन्न करने वाला और पालन करने वाला है। सत्य का उपदेश देने वाला है। सभी अच्छे बुरे कर्मो को देखने वाला, सर्व व्यापक अंतर्यामी और न्यायाधीश है इसलिए उस परमात्मा की उपासना करो उसकी उपासना से ही सुख प्राप्त होगा।

-स्वामी दयानन्द

समाचार दर्पण

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा में उपनयन व वेदारम्भ संस्कार

श्रावणी उपाकर्म के दिवस प्रातः उपदेशक विद्यालय टंकारा में श्रावणी पर्व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। ब्रह्मचारियों तथा आसपास के गणमान्य श्रद्धालु जन यज्ञोपवीत परिवर्तन के लिए यज्ञशाला में उपस्थित हुए। आचार्य रामदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। नये प्रवेश लेने वाले ब्रह्मचारी अत्यन्त उत्साहित थे।

ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार कराया गया। जब ब्रह्मचारी भिक्षा मांगने के लिए उपस्थित लोगों के पास गए तो लोगों ने फलादि से झोलियां भर दी। भिक्षा में प्राप्त सब कुछ आचार्य के चरणों में समर्पित कर दिया। संस्कार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आचार्य जी ने विशेष कर दंड का महत्व समझाया। आचार्यजी ने कहा कि जब ब्रह्मचारी के हाथ में दंड होता है तो ब्रह्मचारी स्वयं को सुरक्षित अनुभव करने लगता है। क्योंकि ब्रह्मचर्यव्रत के दरम्यान वन आदि कई स्थानों पर भ्रमण करना पड़ता है, उस समय रास्ते में आनेवाली घनी झाड़ियां, कांटे आदि में अपना दंड का प्रयोग कर रास्ता बनाया जा सकता है। रास्ते पड़ने वाले नदी-नालों के जल की गहराई भी इसी के सहारेनापी जा सकती है, तथा हिंसक प्राण आदि से अपनी रक्षा की जा सकती है।

सब से अहम् बात तो यह है कि लाठियां भी अनेक प्रकार की होती हैं। यदि उसका ज्ञान हो तो कई रोगों से बचने में भी सहायक होती है, अथवा चिकित्सा के काम भी आती है।

इसी प्रकार अन्य एक विधान है कि संस्कार के समय मानो कि आचार्य

प्रतिज्ञा करते हैं कि आजके बाद तुम मेरे अन्तेवासी पुत्र के बाद मेरा प्रयास होगा कि तेरा शारीरिक, आत्मिक, और बौद्धिक विकास हो यह ध्यान रखना मेरा परम दायित्व होगा।

इस संस्कार के साथ-साथ राजकोट से आए एक परिवार ने अपने पुत्र का तथा आचार्य रामदेवजी की पुत्री तथा पुत्र का भी यज्ञोपवीत एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ।

योग तथा मेडिकल शिविर आयोजित

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट के सहयोग में योग एवं मेडिकल शिविर का सफल आयोजन हुआ। 5 सितम्बर से 8 सितम्बर मुम्बई, कच्छ (गुजरात), सुरत तथा पुणे के ऋषि भक्तों ने आचार्य ओमप्रकाश जी के सान्निध्य में त्रि-दिवसीय योग-चिन्तन शिविर का आयोजन किया। शिविर में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भी योगदान दिया। शिविर के अन्तिम सत्र में शिविरार्थियों के आग्रह पर ब्रह्मचारियों ने भजन तथा प्रवचन का कार्यक्रम दिया। शिविरार्थी इतने प्रभावित हुए कि लगभग प्रत्येक शिविरार्थी ने ब्रह्मचारियों को पुरस्कार दिए। विशेष कर नए और सबसे छोटे ब्रह्मचारी विवेक के तेजस्वी प्रवचन का जोरदार तालियों से अभिनन्दन हुआ, सब एक ही बात कर रहे थे कि आर्यसमाज के भविष्य का टंकारा में निर्माण हो रहा है। इसी प्रकार 15 सितम्बर को राजकोट की प्रसिद्ध धकाण होस्पिटल के सहयोग से मेडिकल शिविर का आयोजन हुआ। दंत, हृदय, फेफड़े तथा आर्थोपिडिक विभाग के विशेषज्ञ डॉक्टर्स आए थे। टंकारा क्षेत्र के सैकड़ों लोगों ने इस शिविर का लाभ लिया। आवश्यकता वाले रोगियों को राजकोट के धकाण अस्पताल में राहत शुल्क पर आगे की चिकित्सा के लिए आने के लिए पत्र दिए गए। शिविर का शुभारम्भ आचार्य रामदेव जी, रमेश मेहता तथा टंकारा के सरपंच कानाभाई त्रिवेदी जी ने दीप प्रज्वलित कर किया।

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना में रक्षा-बंधन पर्व

श्री मोहन लाल जी कालड़ा को राखी बाँधती हुई गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी। रक्षा बन्धन पर्व पर कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल व अन्य

आर्य कन्या गुरुकुल में रक्षा बन्धन पर्व सोल्लास से मनाया गया। सभा की अध्यक्षत श्री मोहन लाल जी कालड़ा (प्रधानाचार्य आर.एस. मॉडल सी. सै., स्कूल, लुधियाना) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती शुभ जी खन्ना पधारी। इस अवसर पर कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल एवं अन्य गणमान्य, आर्य-बन्धु तथा अभिभावक भी उपस्थित थे। गुरुकुल की छठी कक्षा की ब्र. कविता ने अध्यक्ष जी को राखी बांधी। गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने मुख्य अतिथि जी तथा अध्यक्ष जी का परिचय दिया एवं रक्षा बंधन की बधाई देते हुए कहा कि यह त्यौहार भाई बहन के पावन प्रेम को मजबूत करता है। त्यौहार हमारे परिवार को, समाज को तथा देश को सौहार्द की भावना से जोड़ते हैं। उन्होंने पंजाब बोर्ड की दसवीं की परीक्षा का परिणाम बताया।

नवमीं कक्षा की ब्र. श्वेता सिम्मी ने मंच संचालन किया। ब्र. ने भाषण, भजन, गीत एवं योगासनों के द्वारा सभा को मन्त्र मुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि जी ने कहा कि रक्षा बन्धन संकल्प का पर्व है। इसलिए हमें ऐसा संकल्प करना चाहिए कि हममें आपसी सद्‌भाव प्रकट हो। अध्यक्ष जी ने कहा कि रक्षा बन्धन का पर्व नारी की रक्षा व देश की रक्षा करने का संदेश देता है। हमें इसकी शोभा को बनाए रखना है। गुरुकुल के कोषाध्यक्ष श्री आर.बी. खन्ना ने ब्र. की ओर से अध्यक्ष जी को भेंट स्वरूप पुस्तक दी।

गुरुकुल के कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल ने अभिभावकों को रक्षा बंधन की बधाई देते हुए कहा कि त्यौहार हमें अपनी संस्कृति से अवगत कराते हैं। अत: इन्हें उत्साह व प्रेम से मनाना चाहिए जिससे परिवार, समाज व देश का कल्याण हो। प्रधानाचार्य श्रीमती सतीश जी तलवार ने सभा में उपस्थित समस्त महानुभावों का धन्यवाद किया।

प्रो. कथूरिया सम्मानित

इंद्रप्रस्थ साहित्य भारती, दिल्ली प्रदेश द्वारा दीनदयाल शोध संस्थान, झंडेवालन में लोकार्पण एवं सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिन्दी के वरिष्ठ समालोचक, सहृदय कवि, वैदिक विद्वान एवं विश्वविद्यालय, भावनगर (गुजरात) के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया को पूर्व उपप्रधानमन्त्री लाल कृष्ण अडवाणी ने शॉल, पुष्पगुच्छ एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। प्रो. कथूरिया को यह सम्मान आपातकाल में कृष्णमंदिर में भोगी गयी यातनाओं और आपातकाल पर लिखी गयी कविताओं के कारण दिया गया। उल्लेखनीय यह भी है कि प्रो. कथूरिया के 45 से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं और उन्हें 60 से अधिक पुरस्कारों-सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है।

डी.ए.वी. का संस्कृत के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ है। इसके अध्ययन के बिना भारत एवं भारतीयता का ज्ञान अधूरा है। यह कहना था संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान श्री डॉ. इन्द्रमोहन सिंह, पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला जो श्रावणी उपाक्रम एवं संस्कृत दिवस समारोह में मुख्यातिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार में आर्य समाज एवं डी.ए.वी. संस्था का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आर्य समाज डी.ए.वी. स्कूल परिपाल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कई कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विद्यालय के प्राचार्य श्री एस.आर. प्रभाकर जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ''संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा ही नहीं बल्कि यह एक पूर्ण वैज्ञानिक भाषा भी है। समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. महेश गौतम जी ने संस्कृत के अध्यापन के लिए डी.ए.वी. विद्यालय की प्रशंसा की। इस अवसर पर ''ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना'' मन्त्रों से मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता एवं ''सूक्तिलेखन'' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें पचास बच्चों ने भाग लिया।

भगवान मूर्तियों में नहीं है...
आपकी अनुभूति आपका ईश्वर है, आत्मा आपका मन्दिर है।

विदेश में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विदेश में पहली बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन **कनाडा के आर्यसमाज मारखम, टोरंटो** के विशाल प्रांगण में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ गायत्री के महत्व को समझा वहीं यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात किया। आचार्य जी ने कहा कि यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि, सभी शुभकामनाओं की पूर्ति, दान, संगतिकरण और देव पूजा से प्रकृति, ईश्वर से निकटता, सद् विचारों में वृद्धि और अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है। समाज के प्रधान श्री सुदर्शन बेरी ने आचार्य जी का सम्मान कर उनका धन्यवाद किया। सप्तदिवसीय इस गायत्री महायज्ञ को सफल बनाने में सर्व श्री सतपाल चोपड़ा, ओम शर्मा, प्रीतेश, रूपल, रेशमा, दिलीप, चाँदनी आदि एवं वैदिक कलचरर सेंटर के सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा। आर्य समाज के संस्थापक प्रधान श्री अमर ऐरी जी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता रहा। जनसमूह आचार्य श्री को स्थायी रूप से वहीं रहने का आग्रह करने लगे, जिसे आचार्य जी ने विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया। विशाल ऋषिलंगर के साथ यह महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज के विशाल बगीचे में सवा सौ से अधिक नये पौधे आरोपित की। (यह कार्यक्रम स्व. महाशय महाराम जी) **यज्ञ समिति झज्जर** के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ-भजन-प्रवचन अभिनन्दन समारोह के साथ हुआ। एक ही मौहल्ले भट्टी गेट झज्जर के नर्सरी कक्षा से दसवीं कक्षा तक के सवा सौ से अधिक बच्चों ने गायत्री महामन्त्र का भावार्थ कविता के रूप में सुनाकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्रोताओं ने कहा-ये बच्चे आर्य समाज के विशाल बगीचे में नई पौध हैं और भविष्य में वट वृक्ष का रूप धारण करेंगे। महिला आर्य समाज झज्जर की प्रचार मन्त्री श्रीमती रीना जी आर्या यज्ञ ब्रह्मा रहीं। आर्य वीर दल के कर्मठ युवा मुख्यातिथि ने कहा-जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य का पालन करता है उसका सर्वांगीण विकास होता है।

यमुना नगर के आचार्य का सम्मान

श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय गुरुकुल शादीपुर के आचार्य डॉ. राजकिशोर शास्त्री एम.ए. ''दर्शन शास्त्र'' एवं पी.एच.डी. को हरियाणा प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने हरियाणा राज्य भवन चण्डीगढ़ में ''विद्यामार्तण्ड पं. सीताराम शास्त्री आचार्य सम्मान'' से विभूषित किया। जिसमें श्री पहाड़िया जी ने 51000/- इक्यावन हजार रूपये का चेक सहित दुशाला प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर शिक्षा जगत में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने पर उनका मान बढ़ाया।

डॉ. प्रशस्यनिय शास्त्री को राष्ट्रपति सम्मान

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं उपदेशक तथा संस्कृत साहित्य से प्रख्यात कवि एवं कथा लेखक डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री को संस्कृत भाषा में किये गए योगदान के लिए इस वर्ष 2013 के स्वाधीनता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति-सम्मान प्रदान करने की घोषणा की गई है। ज्ञातव्य है कि राष्ट्रपति 15 अगस्त स्वाधीनता दिवस के अवसर पर अरबी, फारसी, पालि, प्राकृत एवं संस्कृत के 20 बीस विद्वानों को प्रतिवर्ष सम्मान प्रदान करने की घोषणा करते हैं। इसमें इस वर्ष संस्कृत भाषा के लिए डॉ. शास्त्री का नाम भी सम्मिलित है। सम्मान में शाल एवं सम्मान के साथ ही 5 लाख रूपये की धन राशि प्रदान की जाती है। डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री को इसके पूर्व संस्कृत भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है। इनके चार कथा संग्रह एवं सात संस्कृत के काव्य संग्रह भी प्रकाशित हैं।

प्रचार एवं अन्न-वस्त्र वितरण

गुरुकुल हरिपुर विगत साढ़े तीन वर्षों से विभिन्न प्रकार से भारत के विभिन्न प्रान्तों के ऐसे इलाकों में जहां अब तक सरकार की ओर से बिजली, सड़क और पानी की समुचित व्यवस्था नहीं हो पाई, आर्यप्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यसमाजों की ओर से वैदिक धर्म के प्रचार की व्यवस्था नहीं हुई है उन इलाकों में पहुंचकर के प्रचार एवं सहयोग कर रहा है। इसी श्रृंखला में गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में तथा जन सहयोग से झारखण्ड प्रान्त के सीमडेगा जिला के कुरडेग विकाखण्ड के लिटीमारा, कसडेगा और गाताडीह को केन्द्र बनाकर विभिन्न 20 के लगभग गांवों के सहस्राधिक लोगों को वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को बताया गया और वैदिक जीवन जीने के लिए उपदेश दिया गया। उपदेश से प्रभावित होकर कुछ परिवारों ने मांस, मदिरा एवं अन्य मादक द्रव्यों का सेवन न करने का लिखित संकल्प लिया।

डी.ए.वी. द्वारा श्रावणी पर्व

डी.ए.वी. सीनियर सैकेण्डरी पब्लिक स्कूल पूंडरी के समाज कल्याण सदन की ओर से प्राचार्या श्रीमती साधना बख्शी जी के दिशा निर्देशन में वृद्धाश्रम फतेहपुर के प्रांगण में रक्षा बंधन व श्रावणी पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य रविन्द्र कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पूण्डरी के समाज कल्याण सदन के छात्रों व अध्यापकों द्वारा हवन-यज्ञ आर्य युवा समाज इकाई की ओर से किया गया। संसार का उपकार करना तथा वेदधर्म का प्रचार व प्रसार करना आर्य समाज व आर्य युवा समाज का उद्देश्य को क्रियान्वित करते हुए कक्षा नवम तथा कक्षा दशम के छात्र व छात्राओं के साथ यह पर्व मनाया गया।

श्रावणी पर्व सोल्लास सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, दिल्ली में अथर्ववेदीय बृहद्यज्ञ के साथ श्रावणी पर्व सोल्लास सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन सायंकाल आ. अंकित एवं श्री गौरव शास्त्री के सुमधुर भजन हुए एवं युवा वैदिक विद्वान आचार्य कैलाश चन्द्र शास्त्री के वेदोपदेश हुए। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन विशेष कार्यक्रम के साथ प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिल्ली के आर्य गुरुकुलों के 101 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। मुख्य अतिथि कामरोस संघ के राजदूत श्री के.एल. गंजू जी ने सपत्नीक उपस्थित होकर बच्चों को आशीर्वाद दिया एवं छात्रवृत्ति प्रदान की। डॉ. महेश विद्यालंकार जी, डॉ. भारद्वाज पाण्डेय जी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, स्वामी विश्वानन्द जी, आचार्य कैलाश शास्त्री के विशेष प्रवचन हुए। प्रधान अशोक सहगल जी ने सबका धन्यवाद किया। सब ने ऋषिलंगर का आनन्द लिया।

वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

<u>आर्य समाज सैक्टर-7, रोहिणी</u> का वेद प्रचार समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रभात फेरी में आर्य समाजों के समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण आर्यजनों, माता, बहनों तथा बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। आर्य महिला सम्मेलन आयोजित में भारी संख्या में माता-बहनों ने भाग लिया। इस अवसर पर गायत्री महायज्ञ-मधुर भजन प्रवचन, रात्रिकालीन-भक्ति संगीत एवं वेद कथा का सभी नर नारियों व युवाओं ने आनन्द उठाया। ग्यारह कुण्डीय गायत्री महायज्ञ ब्रह्म डॉ. शिव कुमार शास्त्री, उपाचार्य राम किशोर शास्त्री रहे। जिसमें चवालीस आर्य परिवारों ने यजमान बनकर यज्ञलाभ उठाया।

❑❑❑

<u>आर्य समाज बी ब्लॉक, शास्त्री नगर, मेरठ</u> में वेद प्रचार सप्ताह बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें पधारे आचार्य चन्द्रदत्त शर्मा का प्रवचन हुआ। विशेष आकर्षण रहा बरेली से पधारे भानु प्रकाश शास्त्री भजनोपदेशक के भजनों ने जनता का मन मोह लिया। उनके भजनों की बड़ी धूम रही। कार्यक्रम का संचालन कर्मठ प्रधान श्री राजेन्द्र सिंह वर्मा जी ने किया।

❑❑❑

<u>आर्य समाज सैक्टर-12, पानीपत</u> में वेद प्रचार कार्यक्रम बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में आचार्य-उषर्बुध जी जयपुर के उपदेश हुए। आर्य जगत के युवा भजनोपदेशक पं. भानु प्रकाश शास्त्री के मधुर भजन हुए। कार्यक्रम की सफलता में प्रधान भगवान आर्य गुप्ता जी एवं राजीव सचदेव एवं वेला भाटिया एवं सुनिता सी.पी. आर्या का पूर्ण सहयोग रहा।

❑❑❑

<u>आर्य समाज, हाथी खाना, महर्षि दयानन्द मार्ग, राजकोट</u> के तत्वावधान में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में वेद प्रचार सप्ताह धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। जिसका संचालन टंकारा महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य श्री विद्यादेव जी ने किया तथा टंकारा के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ व भजन प्रस्तुत किया गया। वेद प्रचार के इस पुनीत अवसर पर पू. प्राचार्य विद्यादेव जी द्वारा परम पवित्र ईश्वरीय ज्ञान ''वेद'' की महिमा का वर्णन किया गया।

❑❑❑

<u>आर्यसमाज पटेल नगर</u> के तत्वावधान में श्रावणी के पवित्र अवसर पर चतुर्वेद शतक यज्ञ प्रधान श्री पुरुषोत्तमलाल आनन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा-आचार्य अमोल जी व सहयोगी आचार्य अमरदेव जी ने यजमानों व श्रोताओं को अपनी मधुर वाणी से मन्त्र-मुग्ध किया और यज्ञ समापन किया। अन्त में प्रधान श्री पुरुषोत्तम लाल आनन्द जी ने सभी का धन्यवाद किया और शान्ति पाठ के साथ यज्ञ का समापन हुआ।

❑❑❑

<u>आर्य समाज सागरपुर, दिल्ली</u> में प्रांगण में वेदकथा का भव्य आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, भजन व प्रवचन श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) द्वारा निरन्तर 4 दिन सांसारिक सुख व दुख पर चर्चा एवं वेदानुसार समाधान, आदर्श गृहस्थ धर्म की महिमा वेद के सन्दर्भ में, विषय पर वैदिक चिन्तन आचार्य योगेन्द्र 'याज्ञिक' ने तद्विषयक पर सरलतम परन्तु गंभीर चिन्तन के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

27वां पारिवारिक वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

<u>महिला आर्य समाज देसराज कॉलोनी पानीपत</u> के तत्वावधान में पारिवारिक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। यह आयोजन प्रति वर्ष अलग-अलग 14 परिवारों में किया जाता है आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर घर पहुँचाना हमारा लक्ष्य है। समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. बी.बी. शर्मा पानीपत ने की। श्री बृजकिशोर शास्त्री जी के निर्देशन में, निर्मला वसु, चन्द्रकान्ता वर्मा, दर्शना शर्मा एवं अरविन्द सैनी ने यज्ञ सम्पन्न किया। ध्वजारोहण श्री रणवीर सिंह जी आर्यवीर के करकमलों से हुआ। श्री ओम प्रकाश जी राघव भजनोपदेशक ने सभी को सरोबोर कर दिया।

भव्य सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का निमन्त्रण

<u>आर्य समाज नेमदारगंज, जिला-नवादा (बिहार)</u> के पुरुषार्थ से मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा एवं **<u>डी.ए.वी. स्कूल्स जोन-2, गया</u>** के संयुक्त तत्वावधान में नेमदारगंज के दुर्गा मण्डप प्रांगण में भव्य सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन होने जा रहा है। जिसमें आर्य जगत् के उद्भट् विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली, आचार्य सोमदेव शास्त्री, मुम्बई एवं भजन गायक पं. कुलदीप आर्य विजनौर एवं श्रीमती सुदेश आर्या, दिल्ली पधार रहे हैं। सम्मानीय पूनम सूरी जी प्रधान डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी, दिल्ली को उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया गया है।

श्रावणी उपाकर्म

<u>गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी (ओड़िशा)</u> में श्रावणी उपाकर्म के शुभावसर पर चतुर्थ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ हुआ। यह महायज्ञ निरन्तर पांच मास तक चलेगा और इसकी पूर्णाहुति जनवरी 2014 को गुरुकुलीय वार्षिक महोत्सव अवसर पर होगी। पारायण महायज्ञ के शुभारम्भ अवसर पर दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में 35 ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार एक सज्जन का वानप्रस्थ दीक्षा से दीक्षित होना तथा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और भी इस अवसर पर गुरुकुल के कुलपति सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण जी आर्य (कोलकाता) के दीर्घायुष्य के लिए त्रिदिवसीय आयुष्काम यज्ञ सम्पन्न हुआ।

मा. सोमनाथ आर्य बने प्रधान

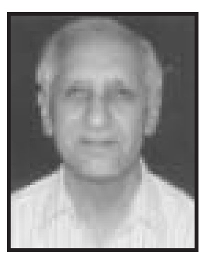

<u>आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव</u> का वार्षिक अधिवेशन श्री ओमप्रकाश आर्य एवं श्री बलदेव राज गुगलानी की अध्यक्षता में निर्वाचन प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न हुई। जिसमें मा. सोमनाथ आर्य को प्रधान चुना गया। मा. सोमनाथ पहले 10 वर्ष महामन्त्री एवं तीन वर्ष तक प्रधान रह चुके हैं। वर्तमान समय में आर्य प्रतिनिध सभा हरियाणा के कार्यकारिणी सदस्य, आर्य समाज अर्जुन नगर के संरक्षक, आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय के महामन्त्री तथा वैदिक कन्या उच्च विद्यालय के उप-प्रधान के रूप में कार्य कर रहे हैं। आर्य सभासदों ने करतल ध्वनि से मा. सोमनाथ के प्रधान बनने पर स्वागत किया तथा सभी आर्य बन्धुओं में खुशी की लहर दौड़ गई। प्रधान चुने जाने पर मा. सोमनाथ ने ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने तथा सभी को संगठन से जोड़कर ऋषिस्वप्न को साकार करने का पूर्णरूपेण संकल्प लिया। सभा ने अधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्य बनाने का अधिकार प्रधान जी को दिया।

शोक समाचार

श्री अशोक सहगल को भ्रातृशोक

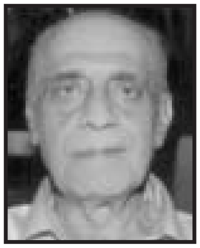

हिन्दू शुद्धि सभा के पूर्व प्रधान स्व. द्वारकानाथ जी सहगल जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री सुरेन्द्र सहगल जी का निधन हो गया। स्व. सुरेन्द्र जी आर्यसमाज राजेन्द्र नगर के प्रधान श्री अशोक सहगल जी एवं आर्य सत्याग्रही स्व. सुभाष सहगल जी के बड़े भाई थे। स्व. सुरेन्द्र जी प्रभुभक्त एवं मधुर गायक थे। आर्यसमाज राजेन्द्र नगर में श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमें कई आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने तथा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डॉ. भारद्वाज पाण्डेय, आचार्य श्यामदेव आचार्य कैलाश चन्द्र, श्री भानुप्रकाश भजनिक (बरेली), आनन्द चौहान (निदेशक एमेटी शिक्षण संस्थान, ए.के.जी ग्रुप, निगम पार्षद राजेश भाटिया आदि गणमान्य लोगों ने स्व. सुरेन्द्र जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए। परिवार ने स्व. सुरेन्द्र जी की स्मृति में डेढ़ लाख रूपये आर्य संस्थाओं को दान दिया। आर्य संस्थाओं को सहगल परिवार का सहयोग निरन्तर मिलता रहता है। प्रभु दिवंगत पुण्यात्मा को एवं चिर शान्ति दे एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करे।

आचार्य विजयपाल विद्यावारिधि दिवंगत

आचार्य श्री का जन्म 25 जनवरी 1929 ई. को ग्राम उजैड़ा जिला मेरठ में हुआ था। तदुपरान्त आपने बी.एस.सी. की परीक्षा दी और गुरुकुल एटा में प्रवेश लिया। जहां आपने अष्टाध्यायी नाम की पुस्तक को कण्ठस्थ कर लिया और बनारस से सम्पूर्ण व्याकरण का अध्ययन किया। आपकी योग्यता का प्रमाण आप द्वारा लिखित, सम्पादित व अनुदित पुस्तकों से मिलता है। आपने निम्न पुस्तकें की रचना की। पाणिनीयाष्टाध्यायो, शुक्ल यजुर्वेद, प्रातिशाख्यथो, मत विमर्श: आदि तीन ग्रंथ हैं। ईश्वर की व्यवस्था मानकर आचार्य श्री रूग्णवस्था में भी प्रसन्न ही रहते थे। आचार्य जी का निधन 7 अगस्त 2013 को आर्ष गुरुकुल रेवली में हुआ। श्रद्धाञ्जलि सभा में अनेक विद्वान, साधु संन्यासी ने उपस्थित होकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। आप द्वारा शिक्षित असंख्य ब्रह्मचारी आर्य समाज के क्षेत्र में वेद प्रचार अथवा शिक्षण कार्य में कार्यरत है।

श्री शनिलाल एम. शर्मा दिवंगत

आर्य समाज बड़ौदा के पूर्व मन्त्री, वैदिक विद्वान, प्रवक्ता और प्रचारक श्री शनिलाल एस. शर्मा ने दिनांक 18.08.2013 को नश्वर शरीर को त्याग दिया। उन्होंने जीवन पर्यन्त वैदिक विचारों का प्रचार-प्रसार किया। उनके यशस्वी पुत्र भी उनके मार्ग पर अग्रसर हैं। समस्त आर्यजन एवं टंकारा ट्रस्ट परिवार श्री शर्मा जी के निधन पर शोक सन्तप्त हैं और उनके परिवारजनों को इस दुःख की घड़ी में साथ खड़े रहने को विश्वास दिलाता है।

चुनाव समाचार

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा हापुड़, उत्तर प्रदेश

प्रधान- डॉ. विकास आर्य **मन्त्री**- श्री अशोक कु. आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री ज्ञानेन्द्र आर्य

आर्य समाज मन्दिर, विभव नगर, आगरा, उ.प्र.

प्रधान- श्री शान्ति प्रकाश आर्य **मन्त्री**- श्री शत्रुह्न स्वरूप आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री चन्द्र मोहन मेहता

आर्य समाज रामां मण्डी, भटिण्डा, पंजाब

प्रधान- श्री सतपाल आर्य **मन्त्री**- श्री शक्ति प्रकाश

कोषाध्यक्ष- श्री बलराज

आर्य समाज पटेल नगर, नई दिल्ली

प्रधान- श्री पुरुषोत्तम लाल आनन्द **मन्त्री**- श्री राजीव कान्त कुमार

कोषाध्यक्ष- श्रीमती सुषमा आहुजा

आर्य नेत्र चिकित्सालय, नई कॉलोनी, पुराना रेलवे रोड, गुड़गांव

प्रधान- श्री भारत भूषण आर्य **मन्त्री**- श्री प्रवीण मदान

कोषाध्यक्ष- श्री शिवदत्त आर्य

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव, आर्य समाज जैकमपुरा, गुड़गांव

प्रधान- मा. सोमनाथ आर्य **मन्त्री**- श्री प्रभुदयाल चुटानी

कोषाध्यक्ष- श्री नरेन्द्र आर्य

भवन का शिलान्यास

आर्य समाज जवाहर नगर पलवल के विशाल प्रांगण में महर्षि दयानन्द सत्संग भवन का शिलान्यास श्री लक्ष्मण देव छाबड़ा महासचिव, मानसरोवर गार्डन, दिल्ली आर्य समाज एवं स्वामी जगदीश्वरानन्द हसनपुर के कर कमलों द्वारा विधिवत सम्पन्न हुआ। छाबड़ा परिवार ने एक लाख ग्यारह हजार का सात्विक दान देकर इस शुभ कार्य में अपना योगदान भी दिया। शिलान्यास का कार्य श्री देसराज शुक्ल ने क्षेत्र के गणमान्य आर्यों की उपस्थिति में यज्ञ द्वारा कराया। मुख्य यजमान प्रधान जय प्रकाश आर्य सपत्नीक थे। अध्यक्षता डॉ. धर्मप्रकाश आर्य पूर्व डायरेक्टर जनरल स्वास्थ्य विभाग ने की।

टंकारा समाचार

के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

(पृष्ठ 8 का शेष)

अर्थात क्षत्रिय बल को धिक्कार है। ब्रह्मतेज से प्राप्त होने वाला बल ही वास्तव में बल है। क्योंकि आज एक ब्रह्मदण्ड ने मेरे भी अस्त्र नष्ट कर दिये।

ब्राह्मण के बाद क्षत्रिय का स्थान था। क्षत्रिय शासक वेदानुकूल चारों वर्णों का पालन करता था। भरत का राम के प्रति यह कथन द्रष्टव्य है–

क्व चारण्यं क्व च क्षत्रं क्व जटाः क्व च पालनम।
ईदृशं व्याहतं कर्म न भवान् कर्तुमर्हसि॥
एष हि प्रथमो धर्मः क्षत्रियस्या भषेचनम्।
येन शक्यं महाप्राज्ञः प्रजानां परिपालनम्॥

(अयोध्याकाण्ड, सर्ग–106, श्लोक 19–20)

अर्थात यदि शरीर को ही कष्ट देने वाले धर्म को ही करने की आपकी बड़ी इच्छा है तो धर्मानुसार ब्राह्मणादि चारों वर्णों के पालन करने का कष्ट आप भोगिये। कहाँ क्षत्रियधर्म और कहाँ जनशून्य वन? कहाँ प्रजापालन और कहां जटाधारण? ऐसे परस्पर विरोधी कार्य आपको नहीं करने चाहिए। क्षत्रिय यदि अपने धर्म का पालन नहीं करता, वह पाप का भागी बनता है और नरकगामी बनता है। राम ने बाली को मारने का यही कारण दिया था। क्षत्रिय धर्म की पालना करते हुए ही श्रीराम परशुराम के क्रोधित होने पर ही अपना पराक्रम प्रदर्शित करते हैं। रामायण के इन प्रसंगों से स्पष्ट है कि वाल्मीकि ने वेद का ही अनुसरण किया हैं। ब्राह्मण के ही समान क्षत्रिय को जितेन्द्रिय, पराक्रमी, यज्ञशील, गुणवान, विद्यावान बनकर धर्मपूर्वक राज्य की धुरा को धारण करना पड़ता था। बूढ़े होने पर दशरथ का कथन है–

राज प्रभाव जुष्टां च दुर्वहामजितेन्द्रियैः।
परिश्रान्त्रोस्मि लोकस्य गुर्वो धर्मधुरं वहन॥

(अयोध्याकाण्ड, सर्ग 2, श्लोक 1)

अर्थात् अजितेन्द्रिय जिस भार को नहीं उठा सकते, मैं राज प्रभा–वानुसार वही गुरुतर धर्मभार वहन करके थक गया हूँ। इस गुरुतर भार को वे अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को सौंपने की अनुमति ऋषियों को देते हैं, जो कि राज्य भार वहन करने में पूर्ण सक्षम और योग्य हैं।

कर्मान्तिकान् वर्धिकनः कोषाध्यक्षांश्च नैगमान्।

(उत्तराकाण्ड सर्ग 91, श्लोक 24)

अर्थात् कार्याध्यक्ष, शास्त्रज्ञ, कोषाध्यक्ष और सेवक सब भरत के साथ अश्वमेघ यज्ञ में चलें। आदि कवि वाल्मीकि ने शूद्रों को भी सेवाकर्म ही कर्तव्य कर्म निर्दिष्ट किया है।

शूद्राः स्वकर्म निरताः जीन् वर्णानुपचारिणः।

(बालकाण्ड, सर्व 6, श्लोक 19)

निषाद राज गुह का राम को कथन है–

वयं प्रेष्या भवान्मर्ता साधुराज्यं प्रशाधि नः।
भक्ष्यं भोज्यं च पेयं लेहयं चैतदुपस्थितम्॥

(अयोध्याकाण्ड, सर्ग 101, श्लोक 39)

युद्धकाण्ड में मृत्य–सेवक के धर्मप्रतिपादन में सेवा–कर्म को प्रमुखता दी गई है–

यो हि मृत्यो नियुक्तः सन् मर्त्रा कर्माणि दुष्करे।
कुर्यातदनुरागेण तमाहुः पुरुषोत्तम्॥
यो नियुक्तः परं कार्य न कुर्यात् नृपतेः प्रियम्।
मृत्यः युक्तः समर्थश्च तमाहुर्मध्यम् नरम्॥
नियुक्तों नृपतेः कार्य न कुर्याद यः समाहितः।
मृत्यः युक्तः समर्थश्च तमाहुः पुरुषाधमम्॥

(युद्धकाण्ड, सर्ग 1, श्लोक 7–9)

रावण भी सीता को उसकी पटरानी बन जाने पर दासियों का लालच देता है–

पञ्चदास्यः सद्म्रणि सर्वाभरण भूषिताः।
सीते परिचरिष्यन्ति भार्या भवसि मे यदि॥

(अख्यकाण्ड, सर्ग 47, श्लोक 31)

निष्कर्षः– वाल्मीकि रामायण में वर्ण व्यवस्था के प्रतिपादन से यही निष्कर्ष निकलता है कि आदि कवि पद पद वेद का अनुसरण करता है। उसमें प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था पूर्णतः वेद के अनुकूल है, कहीं भी वेद के विरूद्ध वर्ण धर्म निरूपिन नहीं हुए हैं। इस युग में वेदों को पूर्ण रूप से धार्मिक महत्व प्राप्त था। राम आदि चारों राजकुमारों का विवाह संस्कार वरिष्ठ ने वैदिक रीति से ही सम्पन्न कराया–

ऋषीश्यापि महात्मानः सहभार्या रधूद्वहाः।
यथोक्तेन ततश्चक्रः विवाहं विधिपूर्वकम्॥

(बालकाण्ड, सर्ग 73, श्लोक 36)

दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ भी अथर्व के मंगों से ही ऋष्यश्रृंग ऋषि ने पूर्ण किया–

इष्टिं ते करिष्यामि पुत्रीयां पुत्रकारणात्।
अथर्वशिसीस प्रोक्तैः मन्त्रैः सिद्धां विद्यानतः॥

(बालकाण्ड, सर्ग 15, श्लोक 2)

रावण को मारने के लिए राम ने अपना बाण वेदोक्त मत्र से अभिमन्त्रित करके धनुष पर चढ़ाया था–

अभिमन्त्रय ततो रामस्तं महेषुं महाबलः।
वेद प्रोक्तेन विधिना संदघे कार्मु के बली॥

(युद्धकाण्ड, सर्ग 110, श्लोक 14)

निःसन्देह वाल्मीकि रामायण में विभिन्न जातियों एवं वर्गो में बंटे हुए समाज को, जिस रहस्यमय भी शक्ति ने सुसंगठित रखा, उसके प्रकट विरोधों में समन्वय स्थापित किया। उसे सत्य, सदाचार और सरपरम्पराओं के मंच पर प्रतिष्ठापित किया, दृष्टिकोण की ऐसी समता और एकात्मता स्थापित कर दी, जिसके समक्ष समस्त वैभिन्य–विरोधाभास तिरोहित हो गये–यह थी–वेदःसम्मत वर्ण व्यवस्था, जिसके कारण रामायण कालीन युग को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा जा सकता है।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर ''डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार'' उस विद्यार्थी को दिया जायेगा जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के आचार्य को शीघ्र भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

सम्पर्क सूत्र– श्री आचार्य रामदेव
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा,
राजकोट–363650, गुजरात। दूरभाष न. 02822–287756

(पृष्ठ 10 का शेष)

इस प्रकार इतिहास के अवलोकन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक धर्म में यज्ञोपवीत अत्यन्त प्राचीनकाल से चला आ रहा है।

उपनयन का समयः इस संस्कार का वेदानुकूल समय ब्राह्मण के लिए 8 वर्ष, क्षत्रिय के लिए 11 वर्ष और वैश्य के लिए 12 वर्ष है, जैसाकि मनुजी महाराज ने लिखा है-

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनयनम्।
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः।। मनु. 2/36

गर्भ से आठवें वर्ष में ब्राह्मण के बालक का यज्ञोपवीत हो जाना चाहिए। गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय और गर्भ से बारहवें वर्ष में वैश्य के पुत्र का यज्ञोपवीत हो जाना चाहिए। व्यासस्मृति तथा महाभारत आदि में भी ऐसी ही विधान है, परन्तु यदि उपर्युक्त समय पर यज्ञोपवीत न हो सके तो ब्राह्मण का 16, क्षत्रिय का 22 और वैश्य का 24 वर्ष से पूर्व यज्ञोपवीत हो जाना चाहिए। यदि इस समय तक भी यज्ञोपवीत-संस्कार न हो तो ये पतित हो जाते हैं।

स्त्रियां को यज्ञोपवीत का अधिकारः कुछ धर्म के ठेकेदार इस अत्यन्त पवित्र और महत्वपूर्ण संस्कार से स्त्रियों को वंचित रखना चाहते हैं, परन्तु प्राचीन ग्रन्थों के अवलोकन से पता चलता है कि प्राचीनकाल में पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार था जैसा कि पारस्करगृ में लिखा है-**स्त्रिय उपनीता अनुपनीताश्च।**

पा.गृ.सू.प. 84 सिद्धिविनायक प्रेस सं. 1936

स्त्रियाँ दो प्रकार की होती हैं-यज्ञोपवीत पहननेवाली और यज्ञोपवीतरहित। इसी प्रकार यम-संहिता में लिखा है-

पुराकल्पे तु नारीणां मौञ्जिबन्धनमिष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवचनं तथा।

अर्थात् प्राचीन समय में कन्याओं का उपनयन संस्कार होता था तथा उन्हें गायत्री का जप और वेदाध्ययन करने की भी आज्ञा थी।

यज्ञोपवीत और गायत्रीः यज्ञोपवीत और गायत्री का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है, अतः यहाँ गायत्रीमन्त्र के सम्बन्ध में दो-चार शब्द लिखना अप्रासंगिक न होगा।

गायत्रीमन्त्र यह है-**ओ३म् भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।** यजु 36/3 हे सर्वरक्षक! सच्चिदानन्दस्वरूप, सकलजगदुत्पादक, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाश्क! आपके सर्वश्रेष्ठ पाप-नाशक तेज को हम धारण करते हैं। हे परमात्मन! आप हमारी बुद्धि और कर्मों को बुरे कर्मों से हटाकर उत्तम कार्मों में प्रेरित कीजिए।

मनु महाराज गायत्री के विषय में लिखते हैं-**सावित्र्यास्तु परं नास्ति।** मनु. 2/83 गायत्री से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। वास्तव में वेद, शास्त्र, पुराण और स्मृतियाँ गायत्री की महिमा से भरे पड़े हैं। इसकी महिमा महान है। जो इसका जप और अनुष्ठान करता है, वही इसके प्रभाव को जानता है।

यज्ञोपवीत सम्बन्धी कुछ प्रश्नोत्तर

प्रश्न-क्या मलमूत्र त्यागने से पूर्व यज्ञोपवीत को कान पर चढ़ाना आवश्यक है?

उत्तर-नहीं, यह आवश्यक नहीं है। कुछ लोग यज्ञोपवीत को कान पर चढ़ाने में यह हेतु देते हैं कि कर्णेन्द्रिय और मूत्रेन्द्रिय का आपस में सम्बन्ध है और यज्ञोपवीत को कान पर चढ़ाने से किसी नाड़ीविशेष पर दबाव आदि पड़ने से वीर्यदोषादि रोग नहीं होते, परन्तु आयुर्वेद और पाश्चात्य शरीर-विज्ञान-सम्बन्धी ग्रन्थों में ऐसा कोई उल्लेख नहीं है कि कर्णेन्द्रिय और मूत्रेन्द्रिय का आपस में कोई सम्बन्ध है। हाँ, इतनी बात अवश्य है कि मल-मूत्र विसर्जन करते समय यज्ञोपवीत नाभि से ऊपर रहना चाहिए, जिससे मूत्रादि के छींटे न लगें और अपवित्र हाथों से यज्ञोपवीत का स्पर्श न हो।

प्रश्न-यज्ञोपवीत अपवित्र कैसे होता है?

उत्तर-यदि यज्ञोपवीत संस्कार होने के पश्चात् तीन दिन तक सन्ध्या न करे तो द्विज शूद्रवत हो जाता है। वह प्रायश्चित करने पर शुद्ध होता है और पुनः संस्कार कराना लिखा है। जन्म-शौच, मरण-शौच, रजस्वला-स्पर्श, टूट जाने पर और स्त्री-सम्भोग के समय कण्ठ पर न चढ़ाने से यज्ञोपवीत अपवित्र हो जाता है तब से यज्ञोपवीत को उतार कर नूतन यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए।

(पृष्ठ 14 का शेष)

तो क्या? आज भी स्थिति यह है कि जिस जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था से इतनी हानि हुई, उसको समाप्त करने के स्थान पर उससे पल्लवित व पोषित किया जा रहा है और उसमें हमारे दलित व पिछड़े समाज के बन्धु भी अज्ञानता व किन्हीं स्वार्थों के कारण इससे जुड़े हैं। समाज में एकरसता व समानता का स्वप्न धूल में मिल गया है। इस अधूरे कार्य को भावी पीढ़ियों को पूरा करना है। हम समझते हैं यह तभी होगा जब ईश्वर महर्षि दयानन्द जैसे एक या अनेक महान-आत्मा महापुरूषों को देश में इस कार्य के निमित्त भेजेगा। ऐसा होना समय की मांग है।

एक अन्य विचार भी प्रासंगिक एवं उपादेयता है। प्राचीन काल व सृष्टि के आरम्भ काल में पूरे विश्व का समाज एक परिवार के समान रहा है। हमारे सबके पूर्वज एक थे व एक साथ परिवार की भांति रहे हैं। हमने स्वार्थो के कारण दीवारें खीचीं हैं। इन दीवारों को गिराकर पुनः एक होने में ही सबको लाभ है एवं हमारा दूरगामी हित है। जो लोग इस बात को न समझें, विरोध करें उन्हें एक तरु कर देना चाहिये और एक नया समाज बनाना चाहिये जहां सबके प्रति गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर समानता का व्यवहार हो, अन्याय व उपेक्षा किसी की भी नहीं होनी चाहिये। सबको योग्यता व शारीरिक क्षमता के अनुसार पुरूषार्थी बनाना चाहिये। सबको शिक्षा, भोजन, आवास, वस्त्र, चिकित्सा, सुरक्षा की आधारभूत, न्यूनतम व सामान्य सुविधायें व लाभ अवश्य मिलने चाहिये। शरीर के उदाहरण से इसको समझा जा सकता है। शरीर का कोई अंग रूग्ण या खराब हो जाये तो प्रयास किया जाता है कि वह ठीक हो जाये व शरीर का अंग बना रहे। उसे शरीर का अंग बनाये रखने के लिए हर सम्भव उपाय किया जाता है। उस व किसी अंग का शरीर से पृथक होने का अर्थ होता है कि उस अंग के अस्तित्व की समाप्ति और शरीर से अलग होने पर शरीर विकलांग व अपूर्ण बन जाता है। अतः भारत के सभी लोगों, वर्ण-जाति-उपजाति आदि, को वृहत्तर समाज का अंग बनना चाहिये। हम समझते हैं इसके लिए वेदों को सबको स्वीकार करना चाहिये। वेदों को स्वीकार कर हम ईश्वर व आत्मा के सत्य स्वरूप को जान पायेगे जिससे हमारा यह जन्म व भावी जन्म सुधरेगें। अन्य मत-मतान्तरों में यह सुविधा नहीं है। किसी के प्रति असमानता का व्यवहार करना, अस्पृश्यता को प्रयोग में लाना या मन में भी विचार करना पाप व अधर्म है एवं वेदों की शिक्षाओं के सर्वथा विपरीत है। इसकी कर्ता को भावी जन्म-जन्मान्तरों में निम्न जीव-योनियों में जन्म लेकर भारी कीमत चुकानी पड़ती है क्योंकि जो जैसा बोता है वैसा ही काटता है। अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। यह सार्वभौमिक नियम है। आइये, वेदों की ओर चले और अपने जीवन को सफल बनायें।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, दूभाष: 094129851212

आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी दिल्ली
चतुर्थ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के समापन समारोह के अवसर पर उपस्थित संस्थापक प्रधान श्री आनन्द चौहान जी, मुख्य संरक्षक डॉ. अशोक चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष एमेटी शिक्षण संस्थान एवम् चेयरमैन ए.के.सी ग्रुप) मुख्य वक्ता श्री वेद प्रताप वैदिक (प्रसिद्ध पत्रकार एवं राजनैतिक विशेषज्ञ) साथ में आर्य समाज के प्रधान श्री अजय चौहान एवम मन्त्री श्री अजय सहगल। वेद प्रताप वैदिक जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए। (दूसरे चित्र में) डॉ. अशोक कुमार चौहान जी इस अवसर पर अपना उद्बोधन एवम् आशीर्वाद देते हुए।

निराश्रितों के आश्रयदाता
पदमश्री वीरेश प्रताप चौधरी जी का निधनः आर्य जगत में गहन शोक

विश्व की समस्त आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष पद्मश्री वीरश प्रताप चौधरी जी का गुरुवार 5 सितम्बर, 2013 को देहावसान हो गया। वे लगभग 75 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार 7 सितम्बर, 2013 को मध्यांतर 3 बजे निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर अनेक राजनैतिक-सामाजिक संस्थाओं के अधिकारी, वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी, अरुण जेटली, डॉ. रमाकान्त गोस्वामी, डॉ. अशोक वालिया, स्वामी रामदेव, ब्र. राजसिंह आर्य, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टी सहमन्त्री श्री अजय सहगल एवम् एवं विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी, अध्यापक एवं दिल्ली व आस-पास की अनेक आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सदस्यों ने अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें विदाई दी। वर्ष 1938 श्री देशराज चौधरी जी के यहां जन्में श्री वीरेश प्रताप जी महर्षि दयानन्द जी की युगान्तरकारी विचारधारा पैतृक विरासत के रूप में प्राप्त हुई। कालान्तर में वे आर्यसमाज की अनेक संस्थाओं के सिरमौर बने उनमें से विशेष रूप से स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य अनाथालय, पटौदी हाऊस, चन्द्रवती चौधरी स्मारक विद्यालयों आदि असंख्य सामाजिक संस्थाओं के आप प्रमुख थे। आप एक प्रमुख वरिष्ठ न्यायविद् थे और उच्च न्यायालय में आप का एक विशेष सम्मान था। आपके सामाजिक क्षेत्र के की गई सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार ने आपको पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया। आप द्वारा किए जा रहे निराश्रितों के कल्याण हेतु कार्यों को देखते हुए ही किसी प्रशंसक ने आपको आर्य समाज की आन, वान और शान का प्रतीक कहा था। आपने जीवन में असंख्य असहाय परिवारों के न्यायालयों में चल रहे विवादों को निःशुल्क सुलझाया।

ना जाने ईश्वर ऐसे सेवा करने वाले लोगों को शीघ्रता से क्यों बुला लेता है? विधि के विधान के आगे सभी को नतमस्तक होना पड़ता है। जब हम उनके पुत्र नृतंजय चौधरी की ओर देखते है जिसे अपने जीवन काल में वीरेश प्रताप चौधरी जी ने पूर्ण रूप से सक्षम बना सेवा कार्यो के लिए समर्पित किया था तो सभी उपस्थित आर्यजन आश्वस्त थे कि पुत्र नृतंजय उनके अधूरे कार्यो को अवश्य पूर्ण करेगा।

समस्त टंकारा परिवार की ओर से भावभिनी श्रद्धांजलि।

जिन्दगी हर हाल में ढलती है, जैसे रेत मुट्ठी से फिसलती है, गिले शिकवे कितने भी हो,
हर हाल में हंसते रहना क्योंकि...... जिन्दगी ठोकरों से ही संभलती है।

I`m smiling
not because I`m stronger
than my problems.
I`m smiling becuase
My God is stronger
than my problems.

टंकारा समाचार अक्टूबर, 2013
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel R.M.S. on 1/2-10-2013
R.N.I. No 68339/98

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय